



XLRI in News

September 2019

PUBLICATION:Ananda Bazaar Patrika
DATE: 10 September 2019
EDITION:Kolkata
PAGE: 11
Headline: XAT 2020

বহু নামকরা ম্যানেজমেন্ট প্রতিষ্ঠানে তর্জিত জন্য প্রতি বছর পরিচালিত হ'বে জেভিয়ার্স অ্যাগটিভিটিজ টেস্ট (জ্যাট)। আগামী বছর জ্যাট পরীক্ষা হবে ৫ জানুয়ারি। পরীক্ষা জেভিপ্রিন্স ইতিমধ্যেই শুরু হয়ে গিয়েছে। রেজিস্ট্রার করাতে হবে অনলাইন। পরীক্ষার যে বিভাগগুলি থাকবে, সেগুলি হল:

ভার্সাল লজিক্যাল এবিলিটি (ডিএ অ্যান্ড এলআর), ডিসিন্স মেকিং (ডিএম), কোয়ালিটিটেড এবিলিটি অ্যান্ড ডেজ ইন্টারগ্রেশন (কিউএ অ্যান্ড ডিআই), জেনারেল নলেজ (জিক), পরীক্ষাটি হবে তিন স্টার। জেভিয়ার্স ইনসিটিউট অব সোশ্যাল সাইন্স, জেভিয়ার্স ইনসিটিউট অব ম্যানেজমেন্ট অ্যান্ড রিসার্চ এর মতো এক্সএমআই-এর সবসম্য প্রতিষ্ঠান ছাড়াও ইন্ডিয়ান ইনসিটিউট অব ফরেক্স ম্যানেজমেন্ট প্রবিন্স বিজনেস স্কুল, ইনসিটিউট অব কন্সাল ম্যানেজমেন্ট, আনন্দ-এর মতো প্রতিষ্ঠানের জ্যাট নিয়ে ভর্তি হওয়া যাবে।

ওয়েবসাইট: www.xatonline.in

জ্যৈষ্ঠ ২০২০

এক্সএলআরআই জেভিয়ার স্কুল অব
ম্যানেজমেন্ট, জামশেদপুর সহ দেশের

PUBLICATION:Business Standard,Hindi
DATE:30 September 2019
EDITION: All Edition
PAGE:12

देश के शीर्ष बिजनेस स्कूलों में नौकरियों की बहार

आईआईएम को छोड़कर एक्सएलआरआई जैसे देश के शीर्ष बिजनेस स्कूलों में प्री-प्लेसमेंट आंकड़ों में पिछले वर्ष के मुकाबले दो अंकों में बढ़ोतरी हुई



विनय उमरजी

इस साल नियुक्तियां पिछले साल से बेहतर रहने की संभावना

अगर देश के शीर्ष बिजनेस स्कूलों में प्री-प्लेसमेंट नौकरियों का दौर आगे भी बरकरार रहता है तो इस वर्ष का प्लेसमेंट दौर पिछले साल के मुकाबले बेहतर रहेगा। भारतीय प्रबंध संस्थानों (आईआईएम) को छोड़कर देश के शीर्ष बिजनेस स्कूल, जैसे एम्सएलआरआई, एमिटी बिजनेस स्कूल और इरमा आदि से मिले प्री-प्लेसमेंट दौर के आंकड़ों में पिछले वर्ष के मुकाबले दो अंकों में बढ़ोतरी हुई है।

प्रमुख राजीव मिश्रा के अनुसार प्री-प्रेसमेंट के दौरान नौकरी प्रस्तावों की संख्या बढ़ने का अहम कारण यह है कि छात्र इंटरनेट के दौरान कंपनी में अपनी क्षमता का प्रदर्शन कर देता है और कर्मचारी उसे बर्तपदा देती है।

मिश्रा ने बिजनेस स्टैंडर्ड को बताया 'सब कुछ कंसल्टिंग जैसे कई क्षेत्रों में कार्प नौकरियाँ मिली हैं। हालांकि

आर्मीमाला और एफएमसीजी कंपनियां ने प्रारंभिक बातचीत के बाद अतिरिक्त प्रस्तावों की संख्या कम कर दी। अंत में आर्मीने प्रक्रिया पूरी होने के बाद भी पचास चरणों में छह साल के कंसल्टिंग जैसे क्षेत्र में ग्रीन-फ़्लेसमेंट और की संख्या बढ़ा दी है। एफएमएलआरआई में पिछले वर्ष के 20 ग्रीन-फ़्लेसमेंट प्रस्ताव के मुकाबले इस बार वस संख्या 18 पर है और अभी बहुत से प्रस्ताव आने की उम्मीद है। कुल आर्मीमें की बात करे तो एफएमएलआरआई-नेविगल स्कूल और मैनेजमेंट में एफएमसीजी कंपनियों ने ग्रीन-फ़्लेसमेंट संबंधी सबसे अधिक नौकरों प्रस्ताव दिए हैं।

एमटी यूनिवर्सिटी के एमटी बिजनेस स्कूल में भी प्रो प्लेसमेंट प्रस्तावों का

प्री-प्लेसमेंट प्रस्तावों के चलते एक तरफ बिजनेस स्कूल अंतिम प्लेसमेंट दोहरे में कम दबाव का अनुमान लगा रहे हैं और पूरी प्लेसमेंट प्रक्रिया को सफल बनाना सुनिश्चित कर रहे हैं। उदाहरण के लिए, एमिटी बिजनेस स्कूल में करीब 300 नियोजका उसके परिसर में आए हैं और यह न सिर्फ पिछले वर्ष की तुलना में संख्या में अधिक है बल्कि विभिन्न काशालाओं के माध्यम से छात्रों को प्रशिक्षित भी कर रहे हैं।

बसल करते हैं, 'छात्रों को लिए अप्रत्याशित कार्यालयों' आयोजित करा जा रही हैं और हमने अधिक से अधिक छात्रों को सफल होने के लिए एप्रील में प्रविष्टि प्रक्रिया से पहले कंपनी विशेष के अनुवां भी कार्यालयों पर करा रहे हैं। एप्रील 4.0 पाठ्यक्रम को ईडस्टू 4.0 को आवश्यकताओं के अनुरूप बनाया जा रहा है। एमटी विनोद सुकुल छात्रों को न कीशल और उद्योग की आवश्यकताओं के हिस्से से प्रशिक्षित छात्रा सुनिश्चित करता है।' एसएलएआरआई की भी उम्मीद है कि इस वर्ष अधिक कंपनियों संस्थान में अपनी विश्वास करते हैं, 'छात्रों की कोशल क्षमता में विविधता के चलते इस वर्ष निवेशक कंपनियों को संख्या में तेजी नहीं दी होगी है।'

PUBLICATION: Business Standard Hindi
DATE: 24 September 2019
EDITION: All Edition
PAGE: 1

ठेका कामगारों को मिलेगी 5 साल से पहले ग्रैज्युटी

सोमेश झा
नई दिल्ली, 23 सितंबर



निश्चित अवधि के अनुबंध पर काम करने वाले कामगारों को 5 साल की नौकरी पूरी होने से पहले ही गैरचुटो का फायदा मिल सकता है। सरकार ने प्रस्तावित सामाजिक सुरक्षा विधेयक संहिता, 2019 में यह प्रावधान किया है। यह विधेयक पिछले सप्ताह लोगों के सुझाव के लिए जारी किया गया।

■ **पेंशेंट्स** सामाजिक सुरक्षा लाभ है जो लगातार 5 साल काम करने के बाद छोड़कर जाने वाले कर्मचारी को दी जाती है।

सरकार निश्चित अवधि वाले कामगारों को स्थायी कर्मचारियों के समान सुविधाएं देना चाहती है और उन्हें ग्रैज्युटी अनुपातिक आधार पर दी जाएगी

जिन्होंने ग्रन्थुटी का लाभ लेने के लिए 5 साल निरंतर नौकरी की अवधि पूरी कर ली हो।

■ निश्चित अवधि रोजगार से उद्योगों को छोटी अवधि के काम

प्रस्तावित सामाजिक सुरक्षा विधेयक संहिता में सरकार ने निश्चित अवधि रोजगार को काम की एक श्रेणी के रूप में

के लिए कामगार रख सकते हैं
और काम पूरा होने के बाद
उनकी सेवा समाप्त की जा
सकती है

श्रीमान् करन की प्रविधान किया है। इसे इस तरह परिभाषित किया गया है कि इसका आधार निश्चित अवधि का लिखित अथवा विकलांगता या निश्चित आय ग्रेड्युटी के लिए 5 साल की आय कामगारों को यह सुविधा नहीं है।

कार कर्मचारी या कामगार के साथ एक अनुबंध होगा। प्रावधान के मुताबिक मौलिक अधिकारों के अभाव में अनुबंध को खत्म होने की स्थिति में नियोक्ता को नुकसान भुगतान करना पड़ेगा। नियोक्ता को नुकसान भुगतान नहीं होगा। दूसरी श्रेणी के कामगारों के लिए अनुबंध नहीं मिलती है।

अच्छी खबर है। इस कदम से व
अपनाने के लिए प्रेरित होंगे क्यों
को टक्कर मिलेगी। दूसरी ओर
करने वाले लोगों की अच्छी अ

कि इससे नियमित मजदूरी की व्यवस्था
नियोक्ताओं को तय अवधि पर काम
पूति मिलेगी।'

उद्योग जगत ठेके पर मजदूरों की अवधि रोजगार की व्यवस्था में मजदूरी की व्यवस्था में ठेकेदारों को जाता है। उद्योगपतियों को लगत बढ़ता है और इसका अनुपात

दूरी की माजुदा व्यवस्था के स्थान पर
या लाने की मांग कर रहा है। ठेके पर
कार के जरिये लोगों को ठेके पर रख
ता है कि इस व्यवस्था से उन पर लागत
मालन बेहद जटिल है।

मराठा चेंबर ऑफ कॉमर्स, प्रदीप भार्गव ने कहा, 'जो उद्योग में विश्वास करते हैं, उन्हें तय को ग्रेच्युटी का फायदा देने में न्यायसंगत व्यवस्था है और मौजूदा को देखे-हाथों के जरिये कामगारों

इंडस्ट्रीज ऐंड एग्रीकल्चर के अध्यक्ष और उद्योगपति नैतिकता और बराबरी के अवधि के अनुबंध वाले कर्मचारियों को कोई दिक्कत नहीं होनी चाहिए। यह मुद्दा व्यवस्था से बेहतर है जिसमें उद्योग को खोना होगा।'

PUBLICATION: Business Standard

DATE: 29 September 2019

EDITION: All Edition

PAGE: 12

Before final placements, rise in PPOs boosts buoyancy at B-schools

VINAY UMARJI

Ahmedabad, 28 September

Going by the trend in pre-placement offers (PPOs) at some of the top and mid-rung business schools, the season is set to get better than last year.

Based on the number of PPOs thus far, B-schools, other than Indian Institutes of Management, such as XLRI, Amity Business School, and Institute of Rural Management Anand (IRMA) are witnessing or anticipating double-digit growth over the same period last year.

While offers are still being confirmed by recruiters, management campuses are expecting the rise in PPOs to ease the final placement process as well.

For instance, having seen a growth in number of PPOs from 18 in 2017 for its 2016-18 batch to 28 last year for its 2017-19 one, IRMA is expecting the numbers to only grow, said director Hitesh Bhatt.

Similarly, XLRI's human resource management students have seen PPOs rise to 58 so far since completion of summer internships, as compared to 53 for the same period last year. According to Rajiv

Mishra, chairperson of placements at XLRI-Xavier School of Management, a major reason for the rise is due to recruiters wanting to hand out more offers through PPOs than final hiring, since candidates have already proved themselves at the organisations during internships.

"Recruiters, especially FMCGs (makers of fast moving consumer goods) are increasingly seeking organisation and culture fit, since capability specific to the sector can be moulded in the management trainee programme most of them have for final hires. The hiring outlook this year looks better in certain sectors such as consulting. However, recruiters from automobiles and FMCG might offer lower numbers, judging by initial discussions. However, the numbers will be known only after the process," Mishra told *Business Standard*.

As such, consulting has already seen a rise in the number of PPOs offered so far this year. At XLRI, as against 20 PPOs offered in all last year, the number this year is already 18, with more expected. In sheer number, FMCG remains the sector which has offered the highest number of PPOs at Xavier School of Management.



Campuses are anticipating reduced pressure during final recruitment process to achieve full placement

Amity University's Amity Business School (ABS) has seen PPOs already double, albeit in small numbers. As against three PPOs last year by mid-September, it has got six, of which three are from Deloitte, said Sanjeev Bansal, director.

"Recruiters are happy with the kind of talent pool we have. There have been new, as well as old,

recruiters which have come till date and shared positive feedback," said Bansal. Among the sectors, he adds, BFSI (banking, financial services and insurance) and information technology have led PPOs at the campus this year.

So, B-school campuses are anticipating reduced pressure during the final placement process. However, they say, they are also ensuring overall successful recruitment in the end.

For instance, ABS, which saw around 300 recruiters visiting, is not only raising the invite base from last year but grooming students. "Students have been given more grooming workshops and we have started giving company-specific ones for the students, to increase the employability prospects. An MBA 4.0 curriculum has been introduced to align with the requirements of Industry 4.0. ABS is ensuring to keep its students updated with the new skills required by industry," Bansal added.

XLRI, too, is anticipating participation from more recruiters. "The number is slated to grow this year primarily because of the diverse interests in the batch, who would be seeking employment in niche sectors as well," Mishra said.

Buoyancy at B-schools due to rise in PPOs



VINAY UMARI
Ahmedabad, 29 September

Going by the trend in pre-placement offers (PPOs) at some of the top and mid-rung business schools, the season is set to get better than last year.

Based on the number of PPOs thus far, B-schools, other than Indian Institutes of Management, such as XLRI, Amity Business School, and Institute of Rural Management Anand (IRMA) are witnessing or anticipating double-digit growth over the same period last year.

While offers are still being confirmed by recruiters, management campuses are expecting the rise in PPOs to ease the final placement process as well.

For instance, having seen a growth in number of PPOs from 18 in 2017 for its 2016-18 batch to 28 last year for its 2017-19 one, IRMA is expecting the numbers to only grow, said director Hitesh Bhatt.

Similarly, XLRI's human resource management students have seen PPOs rise to 58 so far since completion of summer internships, as compared to 53 for the same period last year. According to Rajiv Mishra, chairperson of placements at XLRI-Xavier School of Management, a major reason for the rise is due to recruiters wanting to hand out more offers through PPOs than final hiring, since candidates have already proved themselves at the organisations during internships.

"Recruiters, especially FMCGs (makers of fast moving consumer goods) are increasingly seeking organisation and culture fit, since capability specific to the sector can be moulded in the management trainee programme most of them have for final hires. The hiring outlook this year looks better in

certain sectors such as consulting. However, recruiters from automobiles and FMCG might offer lower numbers, judging by initial discussions. However, the numbers will be known only after the process," Mishra told Business Standard.

As such, consulting has already seen a rise in the number of PPOs offered so far this year. At XLRI, as against 20 PPOs offered in all last year, the number this year is already 18, with more expected. In sheer number, FMCG remains the sector which has offered the highest number of PPOs at Xavier School of Management.

Amity University's Amity Business School (ABS) has seen PPOs already double, albeit in small numbers. As against three PPOs last year by mid-September, it has got six, of which three are from Deloitte," said Sanjeev Bansal, director.

"Recruiters are happy with the kind of talent pool we have. There have been new, as well as old, recruiters which have come till date and shared positive feedback," said Bansal. Among the sectors, he adds, BFSI (banking, financial services and insurance) and information technology have led PPOs at the campus this year.

So, B-school campuses are anticipating reduced pressure during the final placement process. However, they say, they are also ensuring overall successful recruitment in the end.

For instance, ABS, which saw around 300 recruiters visiting, is not only raising the invitee base from last year but grooming students. "Students have been given more grooming workshops and we have started giving company-specific ones for the students, to increase the employability prospects.

Contract workers may get gratuity before 5 yrs' work

SOMESH JHA
New Delhi, 23 September

Workers on a fixed-term contract might soon be eligible for gratuity before completing five years of service, if the government's proposal for this in the Code on Social Security Bill, 2019, is accepted. The Bill was circulated for public

consultation last week. Currently, workers are not entitled to gratuity before completing five years of continuous service, according to the provisions of the Payment of Gratuity Act, 1972. The law does not make any discrimination between casual, contractual, temporary or permanent workers who have

completed five years of continuous service.

Under the new Bill, the government proposes "fixed-term employment" as a category of work, and defines it as: An "engagement of an employee or a worker on the basis of a written contract of employment for a fixed period".

Turn to Page 15

Contract workers ...

According to the latest proposal, the condition of five years is not applicable in case of death or disablement or "expiration of fixed-term contract" — something other workers are also not entitled to. "This is a win-win for both workers and employers. This move will incentivise workers to accept the fixed-term employment system as it will be competitive to regular wage employment. On the other hand, employers will get a good supply of fixed-term workers," said K R Shyam Sundar, a labour economist and professor at XLRI Jamshedpur.

The industry has been demanding for a fixed-term employment framework as a replacement to the existing contractual labour system, under which contract workers

are hired through a contractor. Industrialists find the contractor system to be a cost burden and cumbersome process in terms of compliance.

"Industry and industrialist who are fair and ethical and believe in equity should not mind paying gratuity benefits to fixed-term workers. This is an equitable proposition and better than a framework in which industry was forced to hire such workers through contractors," Pradeep Bhargava, president, Maratha Chamber of Commerce, Industries and Agriculture, said. He said that fixed-term employment provides flexibility to industries in terms of work tenure but it shouldn't come at the cost of workers' benefits.

Under fixed-term employment, contract workers are hired by the industry directly for a fixed tenure but they are entitled to all social security benefits which permanent workers in the same factory or establishment get. Fixed-term employment is best suited for project-based work and the tenure of contract may vary depending upon the requirement of the establishment.

However, fixed-term employees are not entitled for retrenchment compensations and employers are not obligated to give a notice of retrenchment to such workers.

In March 2018, the Central government had notified the Industrial Employment (Standing Orders) Central (Amendment) Rules, 2018 allowing industries to hire fixed-term employment workers — a form of contract system with a fixed-term tenure.

The notification is, however, applicable to industries belonging to the central sphere, as the Central government can frame rules only such for industries. Thus, in order to plug this gap and improve implementation of the government's notification, the Centre has now proposed bringing in fixed-term employment in the central labour laws. The March 2018 notification had mentioned all social security benefits but since gratuity is only eligible to be paid after completion of five years of continuous service, it was not possible to give the gratuity sum on a pro-rata basis.

डॉक्टर वर्गीज कुरियन ओरिएंटेशन आज, डॉ. वंदना शिवा रखेंगी विचार

जमशेदपुर • एक्सएलआरआई के टाटा प्रेक्षागृह में शनिवार को छठवां डॉ. वर्गीज कुरियन मेमोरियल ओरिएंटेशन ऑन सस्टेनेबल डेवलपमेंट व्याख्यान आयोजित होगा। व्याख्यान में मुख्य वक्ता पर्यावरणविद डॉ. वंदना शिवा होंगी। इस दौरान एक्सएलआरआई के निदेशक फादर पी. क्रिस्टी एसजे, संस्थान के डीन एकेडमिक्स डॉ. आशीष के पाणि और वरिष्ठ शिक्षक डॉ. मधुकर शुक्ला भी समारोह में मौजूद रहेंगे। मालूम हो कि मिलक में ऑफ इंडिया डॉ. वर्गीज कुरियन की याद में पिछले 6 वर्षों से प्रत्येक साल यह व्याख्यान एक्सएलआरआई में आयोजित होता है।

PUBLICATION: Dainik Bhaskar, DB Star

DATE: 22 September 2019

EDITION: Jamshedpur

PAGE: 2

एक्सएलआरआई में छठी डॉ. वर्गीस कुरियन मेमोरियल व्याख्यानमाला में पहुंची बेटी डॉ. निर्मला कुरियन केवल पांच प्रतिशत बीमारियां ही आनुवांशिक, 95 फीसदी बीमारियों की वजह प्रदूषण: डॉ. वंदना शिवा

सिटी रिपोर्टर • जमशेदपुर

देश की मशहूर पर्यावरणविद व अर्थशास्त्री डॉ. वंदना शिवा ने कहा - वन परसेंट इकोनॉमी ने दुनिया में आर्थिक विषमता की खाई को चौड़ा किया है। दुनिया के एक प्रतिशत लोगों ने 99 फीसदी संसाधनों पर कब्जा कर रखा है। पैसे के धुवीकरण (पोलराइजेशन) ने मानवता में विषमता पैदा किया है। सबसे खतरनाक इस आर्थिक विषमता ने राजनीतिक-सामाजिक धुवीकरण को भी तेज किया है।

डॉ. शिवा शनिवार को एक्सएलआरआई जमशेदपुर में आयोजित छठी डॉ. वर्गीस कुरियन मेमोरियल व्याख्यानमाला को संबोधित कर रही थीं। डॉ. शिवा ने कहा - 'चंद ब्रिलिनेयर-ट्रिलिनेयर आज की ओपन इकोनॉमी की देन है। दुनिया का हर चौथा आदमी भूखा है। भारत जैसे देश में किसान आत्महत्या कर रहे हैं। अब तो सरकार ने आत्महत्या के आंकड़े तक देना बंद कर दिया है। भीतकी में पीएचडी डॉ. शिवा ने क्वांटम थ्योरी के हवाले से कहा - हर चीज एक दूसरे से इंटर कनेक्टेड है। लेकिन सेपरेशन (अलग) के मेकेनिकल आइडिया ने मानवता के अस्तित्व पर सवाल खड़ा किया है। सबसे बेहतर व्यवस्था वह है जो सह अस्तित्व व आपसी सहयोग पर आधारित होती है। लेकिन आज कुछेक लोग पृथ्वी के सारे संसाधनों का दोहन कर रहे हैं। इसका सबसे नकारात्मक असर हमारे पर्यावरण

पोलराइजेशन ऑफ मनी की देन है बिलिनेयर-ट्रिलिनेयर, 99 प्रतिशत संसाधनों पर एक फीसदी लोगों का कब्जा।

अब नए तरह का उपनिवेश



बकौल डॉ. शिवा - न्यू इकोनॉमी ने देश-दुनिया में नया धनाढ्य वर्ग को जन्म दिया है, जो अग्रेजों के डिवाइड एंड रूल से बाकी लोगों पर शासन कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि आज हम अमेरिका के जंक को खा रहे हैं व अपने आप को मॉडर्न कह रहे हैं। ऐसा लगता है कि चाउमिन हमारा नेशनल डिश बन गया है। जबकि हमारे अपने भोजन काफी पौष्टिक है।



सभागार में मौजूद दर्शक।

नवदान्य मूवमेंट में बासमती-नीम के पेटेंट के खिलाफ लड़ाई लड़ी

डॉ. वंदना ने अपने नवदान्य मूवमेंट के बारे में बताया व कहा - बासमती और नीम के पेटेंट के खिलाफ लड़ाई लड़ी। भारत में जैव विविधता काफी समृद्ध है व हमें अपनी खेती के परम्परागत तरीके को बचाकर रखना जरूरी है। हल व बैल की जगह खेती में ट्रैक्टर के पहुंचने के बाद हमारी प्राकृतिक खेती को नुकसान पहुंचा है।

डॉ. कुरियन ने अमूल से बताया कि सहयोग में है कितनी ताकत

डॉ. वंदना शिवा ने डॉ. वर्गीस कुरियन को को-ऑपरेटिव मूवमेंट का जनक बताया व कहा कि उन्होंने अमूल के जरिए बता दिया कि सहयोग में कितनी ताकत है। उन्होंने को-ऑपरेटिव थिंकिंग पर जोर दिया और एक्सएलआरआई के विद्यार्थियों से कहा कि ऐसी दुनिया बनाए, जो कंज्यूसर आधारित न होकर को-प्रोड्यूसर आधारित है।

बतौर अतिथि डॉ. कुरियन की बेटी डॉ. निर्मला कुरियन भी थी मौजूद

इस व्याख्यानमाला में डॉ. वर्गीस कुरियन की बेटी डॉ. निर्मला कुरियन मौजूद थीं। संस्थान के निदेशक डॉ. पी क्रिस्टी ने डॉ. वंदना शिवा का परिचय दिया। फादर अरूप सेंटर फॉर इकोलॉजी एंड सस्टेनेबिलिटी (फेसेस) के डॉ. मधुकर शुक्ला ने बताया कि डॉ. कुरियन की याद में इस व्याख्यानमाला का शुरू किया गया।

पर पड़ा है। केमिकल फार्मिंग ने हमारी मिट्टी को उर्वरता के साथ हवा व पानी को प्रदूषित किया है। आज केवल

5 फीसदी बीमारियां ही आनुवंशिक (जेनेटिक) होती हैं, 95 फीसदी बीमारियों की वजह प्रदूषण है।

डॉ. वंदना शिवा ने ऑर्गेनिंग फार्मिंग पर जोर दिया, जो सस्टेनेबल डेवलपमेंट के मॉडल पर आधारित है।

PUBLICATION:Dainik Bhaskar
DATE: 23 September 2019
EDITION: Jamshedpur
PAGE:10

एक्सएलआरआई व एनएमएल इस साल प्लेटिनम जूबिली मनाएगी, एक ने प्रबंधन तो दूसरे ने तकनीक के क्षेत्र में अपना नाम किया रोशन 70 साल पुरानी एक्सएलआरआई व एनएमएल ने शहर का ब्रांड वैल्यू बढ़ाया

विशेष रिपोर्ट/जमशेदपुर

लगभग 110 साल पहले जमशेदपुर शहर में 70 साल पुरानी दो ऐसी संस्थाएँ हैं, जो इस शहर की शान हैं। 1949 में स्थापित एक्सएलआरआई जमशेदपुर, जो प्रबंधन की शिक्षा के लिए देश की पहली, एशिया के सर्वश्रेष्ठ संस्थानों में गणना किया जाता है। वहीं, 1950 में स्थापित राष्ट्रीय धातुमय प्रयोगशाला (एनएमएल) जमशेदपुर की विभिन्न तकनीक का इलेक्ट्रॉनिक देश-विदेश की कंपनियों को रोजगार दे रही है। दोनों संस्थाएँ इस साल प्लेटिनम जूबिली मनाएंगी।

एक्सएलआरआई के पढ़े छात्र कंपनियों के शीर्ष पदों पर आसीन

एक्सएलआरआई से पढ़ाई करने वाले स्टूडेंट्स ने देश-विदेश की कंपनियों के साथ ही विभिन्न क्षेत्र में भी उत्कृष्ट नाम रोशन किया है। संस्थान से पढ़े छात्र सर्वोच्च क्वालिटी ऑफ़ीजर्नलीआई कंपनी के प्रमुख कार्यकारी अधिकारी (सीईओ) हैं। लोक नगर बहुराष्ट्रीय कंपनी फुजितीयर की एग्जीक्यूटिव डायरेक्टर हैं। इनके संस्थान के संस्थापक मनीष जैन और मण्ड डी के एक्सएलआरआई जमशेदपुर से पढ़ाई किए हुए हैं। एनएमएल टेक्नोलॉजी के पूर्व सीईओ विनीत नायर और रिकेट केन्सागर के सीईओ चक्रेश खन्ना भी इसी संस्थान से प्रवेश का पूरा सीखे हैं। प्राधान्य के अलावा दूसरे क्षेत्र में भी संस्थान



के छात्रों ने अपना परचम लगाया है। भारतीय संसद में भारत सरकार अधिकाधिक शिक्षा, लोक नगर अधिगामी प्राप्ति, राशन गुणा और अभिज्ञता अन्तर्गत वैद्यक्यन ने भी एक्सएलआरआई से पढ़ाई की है।

एनएमएल ने कृपोला से आगरा के ताम्रमहल की सफेदी लौटाई



तकनीक के क्षेत्र में एनएमएल जमशेदपुर की भूमिका अलग रही है। इस संस्थान के वैज्ञानिकों द्वारा विपरिणत स्पेस लेस कृष्ण कुशेल ने आगरा के ताम्रमहल की सफेदी लौटाई। आगरा के आसपास स्थित कागस और ताक तख्त में

निर्भर करने वाले धातु से पीछा पड़ने ताबनाहल के संगमरमर की सफेदी लौटाने के लिए कुशेल को बनाया। हथवा क्रिज में इलेक्ट्रॉनिक रूप स्टेशन को बनाने में एनएमएल की भूमिका रही है। वहीं नहीं, हाल ही में प्रयोगशाला ने तीन टेक्नोलॉजी को विकसित कर चुका है। इनका नाम गैरमन किया है। विशेष रूप से इलेक्ट्रॉनिक केन्द्र की विचारधारा को लेकर विकसित तकनीक भारत की कंपनियों के अत्यधिक मांग को रोजगार दे रही है। इस तकनीक में कोशिका में मूलभूत धातु विकसित करने के साथ ही बैटरी से कोशिका जैसी धातु विकसित की तकनीक भी शामिल है। हिलमन, मैनीज और फिलिप जैसी धातु भी विकसित की जा रही है।

PUBLICATION:Dainik Bhaskar
DATE:24 September 2019
EDITION: Jamshedpur
PAGE:6

एक्सएलआरआई • नए सत्र से कई प्रशासनिक बदलाव करने की तैयारी बिजनेस मैनेजमेंट कोर्स में आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस की छात्र कर सकेंगे पढ़ाई

विशेष रिपोर्ट/जमशेदपुर

एक्सएलआरआई जमशेदपुर ने नए सत्र से अकादमिक के साथ ही कई प्रशासनिक बदलाव करने जा रहा है। इसके तहत संस्थान नए कोर्स शुरू करने और विद्यार्थियों के स्ट्रेम लेवल को कम करने के लिए काउंसलर की नियुक्ति करेगा। संस्थान के डीन (एकेडमिक्स) आशीष पाणि ने बताया कि तकनीक के बदलते दौर में संस्थान ने आज की जरूरत के अनुरूप नए कोर्स शुरू करने जा रहा है। वहीं नहीं, विद्यार्थियों में उद्यमशीलता को विकसित करने के लिए संस्थान ने इन्क्यूबेशन सेंटर खोला जा रहा है, जो विद्यार्थियों के नए आईडिया को मूर्त रूप देगा। इन्क्यूबेशन सेंटर का नाम एक्स सीड रखा गया है, जिसमें संस्थान के कई पूर्ववर्ती छात्र नए आईडिया को आगे बढ़ाने के लिए वित्तीय मदद देंगे। एक्सएलआरआई के साथ ही बाहर के स्टूडेंट्स अपने नए आईडिया को आगे बढ़ाने के लिए इसकी मदद ले सकते हैं। पाणि ने बताया कि हमने झारखंड के उद्यमियों के लिए झारखंड सरकार से संपर्क किया है।

बिजनेस एनालिटिक्स नाम से कोर्स शुरू किया जा रहा है बिजनेस में आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस के बढ़ते इस्तेमाल को देखते हुए एक्सएलआरआई जमशेदपुर इसे अपने कोर्स का हिस्सा बनाने जा रहा है। एआई और मशीन लर्निंग के इस्तेमाल को लेकर बिजनेस एनालिटिक्स नाम से सर्टिफिकेट कोर्स शुरू किया जा रहा है, जो वचुअल इंटरेक्टिव लर्निंग प्रोग्राम के तहत उपलब्ध होगा। डीन एकेडमिक्स डॉ.पाणि ने बताया कि 2020 से बिजनेस मैनेजमेंट में आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस में स्पेशलाइजेशन का कोर्स होगा।



अगले सत्र से स्पेशलाइजेशन कोर्स होगा शुरू

संस्थान में केस रिसर्च सेंटर की स्थापना की जाएगी

एक्सएलआरआई ने कैम्पस में केस रिसर्च सेंटर खोलने का फैसला किया है। इसके तहत हार्वर्ड बिजनेस स्कूल के केस को क्लासरूम में पढ़ाया जाएगा। आशीष पाणि ने बताया कि हार्वर्ड के केस के लिए हर साल संस्थान को 1.8 करोड़ रुपये देना पड़ता है। इस रिसर्च सेंटर की कोशिश होगी कि हम खुद अपने रिसर्च को विकसित करें।



स्ट्रेम लेवल को कम करने के लिए काउंसलर होंगे नियुक्त

संस्थान ने विद्यार्थियों के स्ट्रेम लेवल को कम करने के लिए एक अक्टूबर से काउंसलर की नियुक्ति करने जा रहा है। डीन (एकेडमिक्स) आशीष पाणि ने बताया कि नेशनल इन्स्टीट्यूट ऑफ मैनजल हेल्थ एंड न्यूरो साइंस (निम्हांस) बंगलुरु की डॉ. पूजा मोहंती को संस्थान वतीर काउंसलर नियुक्त करने जा रहा है। संस्थान पहली बार किसी काउंसलर को फुलटाइम नियुक्त करने

जा रहा है। पिछले साल हुई कैम्पस की घटनाओं को लेकर संस्थान ने यह कदम उठाया है। वकील डॉ.पाणि- विद्यार्थियों पर पढ़ाई के साथ ही नैकरी का दावा काफी है। उम पर पैटेंट्स की महत्वाकांक्षा अलग से होती है। लोन लेकर पढ़ाई करने वाले स्टूडेंट्स भी दवाव में होते हैं। ऐसे में हमने स्थायी रूप से काउंसलर की व्यवस्था की है, ताकि स्टूडेंट्स समस्या को लेकर संपर्क कर सकें।

PUBLICATION: Dainik Jagran, City
DATE: 3 September 2019
EDITION: Jamshedpur
PAGE: 3

भूखों का भरने लगा पेट, शहर में खोला रोटि बैंक

रोजाना एक हजार लोगों को कराया जाता भोजन, एक्सएलआरआई के छात्र बना चुके हैं प्रोजेक्ट

अभिमत दिवादी • जमशेदपुर

जमशेदपुर: मुखालय से करीब 43 किलोमीटर दूर गालुडीह के दारीसाई गांव पड़ता है। सबर्ग के इस गांव में रशन नहीं पहुंचता था। वहाँ के लोग भूखे पेट सोने को विवश थे। लेकिन, झारखंड ह्यूमन राइट्स कांफ्रेंस (जेएचआरसी) के संयोजन प्रमुख मनोज मिश्रा की प्रयास रंग लाई और उस गांव में न सिर्फ रशन पहुंचने लगा बल्कि पूरी गांव की तस्वीर ही बदल गई। दारीसाई गांव में अब समय पर रशन के साथ-साथ बिजली, पानी व सड़क भी बन गया। इतना ही नहीं, गांव में चिकित्सक भी पहुंचने लगे हैं। इसी तरह, शहर के फुटपाथों पर गुजर-बसर करने वालों के लिए रोटि बैंक खोल दिया। इसके माध्यम से रोजाना करीब एक हजार से अधिक भूखों को पीटिक आहार उपलब्ध कराया जाता है। इतना ही नहीं, शारीरिक रूप से कमजोर बच्चे को दूध व खीर भी दी जाती है। इस पहल से प्रेरणा लेकर देश के कई जगहों में रोटि बैंक खोला गया। जमशेदपुर रोटि बैंक पर एक्सएलआरआई (जेवियर स्कूल ऑफ मैनेजमेंट) के छात्रों ने प्रोजेक्ट भी बनाया है।

चार सदस्यों ने मिलकर की थी रोटि बैंक की शुरुआत : 15 जनवरी 2015 को जमशेदपुर के साकची गोलचक्कर से झारखंड ह्यूमन राइट्स कांफ्रेंस (जेएचआरसी) द्वारा रोटि बैंक की शुरुआत हुआ था। आश्विन मनोज मिश्रा के नेतृत्व में चार सदस्यों ने मिलकर अपने-अपने से 10-10 रोटि और सब्जी लाकर इसकी शुरुआत की थी। अब तक



एमजीएम अस्पताल में रोटि बैंक की टीम • जागरण

नई पहल

- गालुडीह के दारीसाई गांव की बदली सूरत, मिलने लगा भोजन
- शारीरिक रूप से कमजोर बच्चों को प्रदान करते हैं खीर और दूध भी

करीब 15 लाख लोगों को भोजन मुहैया करवा जा चुका है। हर दिन लगभग एक हजार लोगों को इस बैंक से भोजन प्रदान किया जाता है। समय-समय पर विशेष शिविर भी लगाकर लोगों के बीच भोजन का वितरण किया जाता है।

स्टेशन पर भूखे बच्चों को देखकर शुरू किया बैंक : रोटि बैंक के संस्थापक मनोज मिश्रा ने बताया कि एक दिन रेलवे स्टेशन पर किसी को लेने के लिए गए थे। रात के करीब एक बजे थे। इसी दौरान एक किशोर डस्टबिन से आगज उठाकर खा रहा था। उसे देखकर मुझे खल नहीं गया और दस रुपये निकाल कर दिया कि जाकर कुछ खा ले। उसी रात में निश्चय किया कि कुछ ऐसा किया जाए



कृपोणा एवं भूख के खिलाफ एक जगह है। झारखंड प्रकृति कुपोषित राज्य है। हममें से हर एक आठ लाख बच्चों का जन्म होता है, जिसमें बार-बार भूख कुपोषित पाए जाते हैं। हेल्थ कैमिली सर्वे रिपोर्ट-4 के अनुसार राबड़ा हर दुनिया का कुपोषित है। कुल जन्म लेने वाले बच्चों में 35 प्रतिशत बच्चे हर वर्ष कुपोषण के कारण खाल के पाल में समा जाते हैं।

मनोज मिश्रा, रोटि बैंक, संस्थापक

ताकि कोई भूखे नहीं सोए। इसके बाद ही रोटि बैंक की शुरुआत की। फिलहाल हर दिन जमशेदपुर के एमजीएम अस्पताल में मरीज व उनके अटेंडेंट्स के बीच भोजन का वितरण किया जाता है।

स्कूल में बनी बगिया, बच्चों को दे रही हरी सब्जियों की सौगात

दीपेन्द्र सिन्हा • बिलासपुर

जी हाँ, छत्तीसगढ़ के गांव चिरदा का शासकीय बालक एवं माध्यमिक विद्यालय 'सुपोषण की जंग' कुछ इस अंदाज में लड़ रहा है। शिक्षक बाबूलाल कर्ष ने गांव के बच्चों को कुपोषण से बचाने के लिए स्कूल में ही 'वेजिटेबल पार्क' बना दिया। तीन साल में इसका सुपरिणाम बच्चों की सेहत में झलक रहा है।

बिलासपुर जिले के मन्दुरी विकासखंड के चिरदा स्कूल में मौजूद ग्राम चिरदा के इस विद्यालय में हर तरह की तकरी उगाई जा रही है। हर मौसम में और हर रोज ताजी सब्जियाँ मुहैया हो जाती हैं। बच्चों के मध्याह्न भोजन में इनका नियमित इस्तेमाल होता है। स्कूल में शिक्षक बाबूलाल कर्ष, साकरवली पटेल और प्रधानाध्यापक छाया कर्ष ने इस बगिया की कड़ीने से सहेजा और संवार दे। बाबूलाल वहाँ वर्ष 2011 से सेवारत दे रहे हैं और स्कूल प्रांगण की खाली जगह पर 'वेजिटेबल पार्क' बनाने का विचार उन्होंने ही साकार किया। कहते हैं, बच्चों को गहने के साथ उन्हें स्वस्थ रखने का हर्षभंग प्रयास करता हूँ। स्कूल के पास में बाउंड्री नहीं होने के बाद भी



बिलासपुर, छत्तीसगढ़: शासकीय बालक एवं माध्यमिक विद्यालय ग्राम चिरदा है वेजिटेबल पार्क • आईएनडिजिटल

शिक्षक और बच्चे वेजिटेबल पार्क के रूप में किचन गार्डन बनाकर सब्जियाँ उगा रहे हैं। बच्चों को प्रतिदिन शारीरिक व्यायाम के अलावा मध्याह्न भोजन में ताजा सब्जियों के अलावा पोषक भोजन देने पर जोर रहता है। सोजने के हिसाब से कद्दू, लौकी, रंखिया, चिंड़ी, करेला, तुरई, सेम, बरबट्टी, खीरा आदि तरकारियाँ बगिया में मौजूद हैं।

टमाटर, मेथी, फलक, लाल भाजी, आलू, करेला भी ठंड के मौसम में उगाए हैं। स्कूल के आसपास पक्वाँ खाली जगह है, जिसका इस काम में उपयोग किया जा रहा है। ग्रामीणों को भी बीज देकर हरी सब्जियाँ उगाने और प्रतिदिन के सेवन में उपयोग के लिए प्रोत्साहित करते हैं। बाबूलाल ने बताया, खास बात यह कि बगिया में शासनाधिक दवाओं

का बिल्कुल प्रयोग नहीं करते। इसी का परिणाम है कि जिन बच्चों को दो साल पहले शारीरिक कमजोरी थी, वे आज फिट हैं।

जिला शिक्षा अधिकारी, बिलासपुर आरएन होराधर कहते हैं, शिक्षक बाबूलाल का कार्य सराहनीय है। किचन गार्डन स्कूली शिक्षा में एक नवाचार है। इससे बच्चों की पुस्तकीय ज्ञान के अलावा भौतिक ज्ञान का विकास होता है। कुपोषण मुक्त भारत में यह एक कारगर कदम है।

छत्तीसगढ़ गौरव रत्न पुरस्कार से नवाजे जा रहे बाबूलाल : शिक्षक बाबूलाल को सन 2018-19 में उत्कृष्ट शिक्षक का अवार्ड भी मिल चुका है। उन्हें छत्तीसगढ़ गौरव रत्न पुरस्कार से भी नवाजे जाने की घोषणा हो चुकी है।

PUBLICATION: Dainik Jagran, City
DATE: 10 September 2019
EDITION: Jamshedpur
PAGE: 2

पहल

किसानों की आय बढ़ाने के लिए किया गया फार्मर्स चैंबर ऑफ फार्मर्स का गठन

फार्मर्स मैनेजमेंट का लाभ मिल रहा किसानों को

जागरण विशेष

दिलीप कुमार • जमशेदपुर

पूर्वी सिंहभूम जिले के किसानों की आय दोगुनी करने के लिए चैंबर ऑफ फार्मर्स का गठन किया गया है। चैंबर ऑफ फार्मर्स में मैनेजमेंट के पूर्व छात्र भी शामिल हैं, जो फिलहाल खेती किसानों से जुड़े हैं। चैंबर को इन किसानों के मैनेजमेंट के अनुभव का लाभ मिल रहा है। इसमें कम पढ़े-लिखे किसानों के साथ-साथ एक्सएलआरआइ के पूर्व छात्र राकेश महंती भी हैं, जो नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ फिसरीज, कोलकाता और तसर रिसर्च सेंटर, रांची से सेरीकल्चर में प्रशिक्षित हैं। महंती 2012 से 2017 तक टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज में सेवा दे चुके हैं। वहीं रांची यूनिवर्सिटी से पोस्ट ग्रेजुएट व एक्सएलआरआइ की पूर्व छात्र सुदीपा घोष घाटशिला के खुंटाडीह में फूलों की खेती कर रही हैं। इनके अलावा झारखंड सरकार की ओर से इजरायल जाने वाले पटमदा के किसान श्रीमंत मिश्रा व पटमदा प्रखंड स्थित बासगढ़ गांव के यदुनाथ गोराई भी हैं,



चैंबर ऑफ फार्मर्स की बैठक में शामिल लोग • जागरण

किसानों को मंच प्रदान करना है मुख्य उद्देश्य

इसका उद्देश्य प्रगतिशील किसानों को मंच प्रदान करना है, ताकि अपने अनुभव व खेती-किसानी की नई तकनीक साझा कर सकें। मैनेजमेंट के छात्र रहे किसान अपने अनुभव और वैज्ञानिक तरीके से खेती-किसानी कर उत्पादन बढ़ाने के साथ आय दोगुनी करने की तकनीक अन्य किसानों के साथ साझा करेंगे। इससे आने वाले समय में निश्चित तौर पर चैंबर ऑफ फार्मर्स से जुड़ने वाले किसानों को लाभ मिलेगा। चैंबर का प्रयास रहेगा कि वर्ष 2022 तक किसानों की आय दोगुनी हो सके। किसानों को उत्पाद का अधिकतम लाभ मिल सके, इसके लिए चैंबर व्यवस्था करेगा। साथ ही कृषक फेडरेशन की स्थापना की जाएगी। चैंबर ऑफ फार्मर्स का निर्बंधन कराने के बाद इसे सहकारी संस्था का स्वरूप दिया जाएगा।

जमशेदपुर प्रखंड के गोडगोड़ा गांव के हैं, सिंहभूम में अक्वल नाम है। नरेश किस्कू समेकित कृषि का बेहतरीन तरीका जानते

हैं। डुमरिया के किसान पुलक कुमार साव ने यहां की जलवायु में अंगूर की खेती करके साबित कर दिया कि किसान चाहे तो परंपरागत खेती के अलावा कुछ भी कर सकता है।

मार्केट पर किसानों का हो कंट्रोल

एक्सएलआरआइ की पूर्व छात्रा सुदीपा घोष ने बताया कि चैंबर गठन के बाद कुछ सुझाव दिए गए हैं। उन्होंने मार्केट पर किसानों का कंट्रोल रहने की वकालत की है। किसी वस्तु के दाम का एक निश्चित हिस्सा उत्पादक के पास जाता है, जबकि किसानों के उत्पादन में ऐसी बात नहीं है। उन्होंने कहा कि किसानों को मूल्य काकम से कम पचास प्रतिशत हिस्सा मिलना चाहिए। वैसे ही किसानों के फायदे के लिए एक्सएलआरआइ के पूर्व छात्र राकेश महंती ने जल संसाधन के सही उपयोग और किसानों के लिए बिजली की आपूर्ति ठीक करने पर बल दिया। चैंबर के सदस्यों ने किसानों के आय दोगुनी करने के लिए और महिला किसानों को बढ़ावा देने के लिए को ऑपरेटिव बनाने की बात कही।

PUBLICATION: Dainik Jagran
DATE: 22 September 2019
EDITION: Jamshedpur
PAGE: 7

सहकारिता प्रकृति व सामाजिक न्याय का नियम : डॉ. वंदना

जागरण संवाददाता, जमशेदपुर : सहकारिता प्रकृति व सामाजिक न्याय का नियम है जबकि प्रतियोगिता एक कृत्रिम संरचना है जो अभाव व विवाद का निर्माण करती है। यह कहना था प्रख्यात पर्यावरणरणीय कार्यकर्ता डॉ. वंदना शिवा का। वे जेवियर स्कूल ऑफ मैनेजमेंट - एक्सएलआरआइ में शनिवार को आयोजित छठे डॉ. वर्गीस कुरियन मेमोरियल ओरेशन ऑन सस्टेनेबल डेवलपमेंट कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि संबोधित कर रही थीं। वननेस वर्सेस द वन परसेंट इकोलोजिकल रिस्पांस टू द थ्रेट फोर प्लेनेट एंड इंडस्ट्री विषय पर बोलते हुए उन्होंने डॉ. वर्गीस कुरियन के योगदान को याद किया। उन्होंने कहा कि सहकारी डेयरी को विकसित करने के लिए जो सिद्धांत और विचार डॉ. वर्गीस कुरियन के थे वहीं उनके (डॉ. वंदना शिवा के) लिए मूलमंत्र बने। ये सिद्धांत न्याय व सतत व्यवस्था से जुड़े थे। डॉ. कुरियन का आंदोलन सहकारिता पर आधारित था न कि प्रतियोगिता पर। उन्होंने छोटे-छोटे उत्पादकों पर फोकस किया और विश्व की सबसे बड़ी डेयरी अर्थव्यवस्था खड़ी कर दी।



डॉ. वर्गीस कुरियन स्मृति व्याख्यान में संबोधित करती डॉ. वंदना शिवा • जागरण

छोटे कृषकों के लिए है नवदन्धा मूवमेंट : अपने नवदन्धा मूवमेंट के बारे में बताते हुए डॉ. वंदना शिवा ने कहा कि यह छोटे किसानों के लिए है। औद्योगिक कृषि आधारित रसायन कृषि भूमि को नष्ट कर रहे हैं। जल संकट बढ़ रहा है और पर्यावरण एक चुनौती बनी हुई है। इसका असर है कि आज भूख, कुपोषण व गंभीर बीमारियां बढ़ रही हैं। नवदन्धा के अभियानों ने यह साबित कर दिखाया है कि एग्रो इकोलोजी के जरिए पर्यावरण को सुरक्षित रखते हुए हम भूख व कृषकों के आत्महत्या करने जैसी समस्या को मिटा सकते हैं। साथ ही कैसर जैसी गंभीर बीमारियों को बढ़ावा देनेवाले जहरीले केमिकल का विस्तार भी रोक सकते हैं।

PUBLICATION:DT Next
DATE: 18 September 2019
EDITION: Chennai
PAGE: 9

Ola to hire over 100 freshers from B-schools, top engineering colleges

BENGALURU: Ola on Tuesday said it plans to hire over 100 freshers from top engineering colleges and B-schools for roles ranging from product developers and research engineers to business analysts over the next 6-12 months.

Ola is targeting premium business schools and institutes across the country, including IIMs (Ahmedabad, Bangalore, Calcutta and Lucknow) as well as institutes like XLRI, ISB, NIT, BITS Pilani and IITs (Delhi, Madras, Roorkee and Guwahati) amongst others as part of its campus placement programme - Campus Connect, Ola said in a statement.

"The company will be hiring more than 100 software developers, research engineers, business analysts, product developers, management graduates, program managers to its team over the next 6 to 12 months," it added. Ola's current workforce is estimated to be at over 7,000 employees across areas like mobility, financial services, food and fleet management.

The Bengaluru-based company also runs a specialised campus induction programme called 'Elevate'. It is a 12-month immersive program to help campus hires make a smooth transition from academics to the workforce, it said. They interact



with leadership from various business verticals, spend time on-boarding driver-partners, and at call centres, dark kitchens as well as Ola kiosks at mass transit hubs. The goal is to impart hands-on experience and deeper insight into various business verticals, procedures and objectives, the statement said. "Hired earlier this year, more than 60 new hires are currently undergoing the 12-month training at Ola as a part of the ongoing edition of Elevate," it added.

Srinivas Chunduru, group chief HR officer at Ola said "We are expanding our services globally, penetrating deeper within India with new product innovations, adding more verticals to our business; all of this opens up endless learning and growth opportunities for our people."

PUBLICATION:Dainik Jagran
DATE: 28 September 2019
EDITION: Jamshedpur
PAGE: 5

एक्सएलआरडी के पूर्व निदेशक को मिले दो पुरस्कार

जासं, जमशेदपुर : एक्सएलआरडी के पूर्व निदेशक फादर ई इब्राहिम भारत में मैनेजमेंट की पढ़ाई के क्षेत्र में योगदान योगदान देने के लिए दो प्रतिष्ठित पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। एकेडमिक लीडरशिप के लिए ऑल इंडिया मैनेजमेंट एसोसिएशन की ओर से केवल नोहरिया अवार्ड तथा एआईएम संगठन की ओर से आस्मा लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड से भी सम्मानित किया गया है।

PUBLICATION: Free Press Journal

DATE: 23 September 2019

EDITION: Mumbai

PAGE: 5

'Indian economy needs all-round sustained measures'

Prof. Gaurav Vallabh, the national spokesperson of the All India Congress Committee, in an interview with Free Press Journal's Political Editor **Pramod Chunchuvar**, explained the current grim picture of the Indian economy under the Modi government. He said that the recession is badly affecting Maharashtra, which is one of the most industrialised state. Gaurav is also the professor of finance at **XIRRI** Jamshedpur and an expert on the economy, with academic qualifications of a Chartered Accountant, Company Secretary and PHD. Edited excerpts:

MONDAY INTERVIEW

After the release of first quarter's figures for the current fiscal year, much talk is about the grim picture of the economy. What is your take on the status of the Indian economy?

The first quarter figures have exposed the Narendra Modi government. The arrogance of Modi government had sent the economy into a tailspin. GDP growth rate for the first quarter of current financial year is at 5% and this is a highly disturbing news. The manufacturing growth rate reduced from 12% in FY18 to 0.6% in FY20 and shows how the manufacturing sector has been hit the worst. Agriculture growth rate reduced from 5% to 2% in the current financial year (FY20), compared to FY19. Rural India is also in a terrible shape. Farmers are not

What is the impact of all these indicators on Maharashtra's economy?

Maharashtra, more than 610 farmers committed suicide during the period January 2019 to June 22, 2019, indicating the intensity of drought and rural distress in the state. Maharashtra is witnessing one of the worst droughts, with many villages struggling to even get drinking water. As of August 2019, sugar millers in Maharashtra still owed sugarcane farmers around Rs 585 & crore in fair and remunerative price (FRP) payments for the season of 2018-19, which translates to 2% of the total dues for the season. In FY18, bank loans to industries in Maharashtra declined for the first time in 30 years. Outstanding loans to industries in Maharashtra grew steadily since 1980, but it fell 4.5% on a year-on-year basis in FY18 due to lower demand from industries. In February 2019, the Maharashtra government advertised the 'Make in Maharashtra' programme, which would bring Rs 1 lakh crore worth investments and generate 40 lakh new jobs. In February 2019, the Maharashtra government advertised the 'Make in Maharashtra' programme, which would bring Rs 1 lakh crore worth investments and generate 40 lakh new jobs. In February 2019, the Maharashtra government advertised the 'Make in Maharashtra' programme, which would bring Rs 1 lakh crore worth investments and generate 40 lakh new jobs.

What is the status of the automobile industry? How is it affecting Maharashtra?

There is a 32% decline in car sales and more than 33,000 employees lost their jobs in the automobile sector alone in the last two months. Hundreds of automobile showrooms closed operations. Similarly, there will be large-scale job losses in the informal sector and hurting our most vulnerable workers. With the auto sector in severe crisis and key large manufacturers shutting down for a minimum of three to five days in a week, the risk of more than 10 lakh people losing jobs is looming large. Maharashtra is a key state that is affected significantly by the auto slowdown coupled with a major impact on the state. This has left more than 1.87 crore people on the verge of

an economic bankruptcy.

Do you feel India must build its oil reserves?

After the Saudi oil reserves were attacked, fuel prices will rise in India. To insulate the country from the volatility of the oil industry, the UPA government led by Congress decided to build facilities to store oil. UPA had built underground oil storages in Visakhapatnam, Paradip, Padur and Mangalore in Karnataka and each one could store 5.3 mn m of oil. But the NDA government has ignored these measures

flawed implementation of a good concept of GST has re-added into firing the bullet in the chest of the formal economy. While the economy is infected with a cancer, the government is assuming that this is a case of "common cold" caught from the global headwinds and could be easily cured by a "balm".

Do you feel only an economist or a technocrat can run the country?

No not say that the prime minister should always be an economist or technocrat. But for specialised subjects, the

to the 2013-14 figures. The Generalised System of Preferences (GST) Agreement, which has included India since 1974, has removed it from the list of countries. This means that the US has banned duty-free imports from India. This will result in Indian commodities like textiles, cotton, mangoes prepared or preserved by farmers, handicrafts, gold jewellery, sandstone etc. costlier to US consumers, compared to other countries in the list that export to the US. Why doesn't Modi raise his objections on these issues during his US visits or interactions with President Donald Trump?

What wrong capitalism has done India Gandhi is upholding the banks?

It is a malicious campaign against India Gandhi and the Congress. The nationalisation of banks played an important role of economic development. Poor people could open an account in the banks due to nationalisation. The liberalisation process could take place due to the nationalisation of banks. Farmers and ordinary consumers could avail bank loans due to this.

What is the status of the banking sector?

The non-performing assets (NPAs) in the banking industry are consistently rising. RBI's real time data will be based after its recent transfer of Rs 1.75 lakh crore to the government. How can we understand the nuances of economy and finance? There are many economists and they should be considered for this post. Both the finance minister and RBI governor are not a trained economist and this is affecting our economy.

Why is India not cashing on the trade war between China and the US?

We want to cash in on this trade war. We should have that determination and policies. Our merchandise exports to China in the last four years have not grown and is constant. PM Modi the quarterly visits the US, but the US visa rejection rate has increased to 40%, compared

I will not give the PM any rating. But I want to say that she is not understanding the problem. This recession is not due to the global factors. We are a consumption-based economy and there is no reduction in consumption. In 2008, the world was hit by a severe recession, but India was least affected due to the able leadership of Dr Manmohan Singh. Narendra Modi and the NDA government should "act" beyond the customary headline management and the tepid press conferences to change this situation. The Modi government killed the economy with two bullets. The first bullet was demonetisation that killed the informal economy largely in rural and semi-urban sectors and another was the Goods and Services Tax (GST). The flawed implementation of a good concept of GST has resulted into firing the bullet in the chest of the formal economy.

and lower cash inflow if the borrower is in a business. As per Care Ratings, of the 36 banks, 17 are having NPAs above 10% and most of them are PSB banks. RBI, in its financial stability report, had said that the NPAs are expected to be lower at 8%. However, within two months, the situation is completely changed and the most likely figure is 12%. By FY2020, earlier, it was the PSB banks that were in trouble. Since March 2019, the NPA fever has caught up with the private banks as well and the situation is likely to be more serious as private banks have a significant exposure to retail lending.

What can be done to revive the real estate sector?

The NRECA sector or the shadow banking sector, which since very long has been assisting in financial inclusion, has been hit the worst.

To boost demand not only in rural or real estate sector but in all sectors of the economy, we will need to monetise the rural economy. The economy can be put on a growth trajectory only by providing liquidity at the bottom level. The Mahatma Gandhi National Rural Employment Guarantee (MGNREGA) scheme should be effectively implemented.

1.76 lakh crore to the government, which claims that it does not have a plan on what it will do with this windfall. After a simple surge in corporate loan NPLs in the last five years, the next visit of NPLs is likely to come from retail loans, which typically are car loans, home loans, personal loans and credit card outstandings. This is due to the loss of jobs

category, thereby creating further problems in raising capital for the real estate sector. It is pertinent to note that if people have money they will buy homes. To boost this sector, money should pass on to the common man and buyers.

How can we boost rural demand? What solutions does Congress party have to improve the economy?

The Mahatma Gandhi National Rural Employment Guarantee (MGNREGA) scheme should be effectively implemented. The government should spend on creating infrastructure especially in rural areas, as this will ensure liquidity at the bottom level. By lowering corporate taxes, the products of these companies may be cheaper but consumers are not in a position to buy even at a cheaper rate. To monetise the bottom of the economy, NYAY (minimum income guaranteed scheme) proposed by the Congress is one of the best alternatives. This will ensure monetisation of the economy and transfer money to poor people's hand. The short-term stimuli does not help beyond a certain level. This only acts as a band-aid for the economy. Other measures will be to reform GST and focus on the revival of sectors like retail, personal and textile that can create jobs in large numbers.

receiving adequate prices and rural incomes have declined. The low inflation rate that the government likes to showcase comes at the cost of our farmers and rural incomes. Construction growth rate reduced from 9.6% in

drinking water. As of August 2019, sugar millers in Maharashtra still owed sugarcane farmers around Rs 585 & crore in fair and remunerative price (FRP) payments for the season of 2018-19, which translates to 2% of the total

PUBLICATION: Hindustan Times

DATE: 23 September 2019

EDITION: Jamshedpur

PAGE: 2

Environmentalist focusses on small seed, urges cooperation to beat hunger, save earth

Debashish Sarkar

• h@sarkar@hindustantimes.com

JAMSHEDPUR: Noted environmentalist and eco-feminist Dr Vandana Shiva urged people to work in cooperation and not competition for a sustainable world as envisaged by Amul Cooperative founder Dr Verghese Kurien, known as 'the milkman of India' during 6th edition of annual oration organised in his memory at the XLRI- Xavier School of Management auditorium on Saturday.

"Dr Verghese Kurien Memorial Oration on Sustainable Development" was organised under the aegis of Fr Arrupe Center for Ecology and Sustainability (FACES), XLRI. Dr Shiva delivered her speech on the topic "Oneness vs The 1%: Ecological responses to the threat for planet and humanity."

"The principles and ideas, that shaped Dr Kurien's contribution to the cooperative dairy sector, have shaped my work on seeds, biodiversity and agro-ecology. These are principles of justice and sustainability," said Dr Shiva. The event was also graced by Nirmala Kurien, daughter of Dr Verghese Kurien.



■ Environmentalist Vandana Shiva in Jamshedpur.

HT PHOTO

She pointed out that Dr Kurien's movement was built on cooperation and not Competition. "Cooperation is the law of nature and justice in society, cooperation creates abundance and peace. Competition is an artificial construct that creates scarcity and conflict. Dr Kurien focused on the small producers and created the largest dairy economy of the world. He did not impose the violence of centralised factory farms," she added.

Elaborating about her 'Navdanya' movement, she said that it focuses on the small seed and small farmer.

"Industrial agriculture based on fossil fuels and chemicals

has destroyed soil, contributed to water emergency and climate emergency leading to hunger, malnutrition and chronic diseases. Navdanya's work has shown that by conserving our biodiversity and practising agro-ecology, we can remove hunger, end farmer suicides and stop the spread of toxic and chemicals which are killing biodiversity and spreading cancer," said Dr Shiva.

Fr. P. Christie, XLRI director, said, "We are indeed privileged to have with us Dr Vandana Shiva, a well-known environmental activist, food sovereignty advocate, and an active participant in the global solidar-

ity movement known as the alter-globalisation movement. She has actively promoted biodiversity and indigenous knowledge to increase agricultural productivity, nutrition and farmer's income. She has devoted her life to give life to earth and the poor who have been affected."

Prof. Madhukar Shukla, Chairperson of XLRI's Fr Arrupe Center for Ecology & Sustainability (FACES) said FACES at XLRI was established with the mission to promote practices and policies, which will help create an environmentally, socially and economically sustainable and just society.

PUBLICATION: Hindustan

DATE: 5 September 2019

EDITION: Jamshedpur

PAGE: 4

21 को कूरियन की याद में होगा कार्यक्रम

जमशेदपुर। एक्सप्रेस/आरआई में 21 सितंबर को एएमएल के संस्थापक डॉ. वर्गेस कूरियन की याद में कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा। डॉ. कूरियन को द मिलकमैन ऑफ इंडिया के नाम से जाना जाता है। देश में शेवट कूरियन का श्रेय डॉ. वर्गेस कूरियन को जाता है। कार्यक्रम में अर्चना श्री डॉ. अदना समेत विद्वान, पर्यावरण कार्यकर्ता आदि उपस्थित रहेंगे।

PUBLICATION:Hindustan
DATE:5 September 2019
EDITION:Jamshedpur
PAGE:6

जो बनाए हमें इंसान, उन्हें शत-शत प्रणाम!

शिक्षक, हर किसी के जीवन का महत्वपूर्ण आधार होता है, शिक्षक के बिना सम्पूर्ण जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती है, क्योंकि गुरु के बिना, ज्ञान संभव नहीं है और ज्ञान के बिना नवतृष असुर है। तभी तो संत कबीर दास ने कहा है-**गुरु पासस को अन्तर्य, जानता है सब सत्ता। वह लोहा चंचल करे, ये लहरि सब महन्ता।** यानि, गुरु और पासस परस्पर ने अन्तर है, यह सब सत्ता जानते हैं। पासस तो लोहे को सोना बनाता है, परन्तु गुरु शिक्षा को अपने समान मानन बना लेता है। शिक्षक अपने विद्यार्थियों को भी सिरफ़ पट्टी जन्मान देकर उनका जीवन उज्ज्वल करते हैं, बल्कि अपने स्वयं समान को निर्माण भी करवाते हैं। इसी भावना से शिक्षकों के प्रति अपने समानों को अधिकृत करने का विचार हिन्दुस्तान अपने पाठकों के लिए कुछ ऐसे किसानों की कहानीयों साक्षात एक रख के समाज के लिए बेहद अन्तर्क को कह रहे हैं।

जहां से की थी पढ़ाई, अब वहीं पढ़ा रहे प्रजबेश रे

उज्जयिणी | राजनीति विवारी

[illegible]

शिक्षण के नए तरीकों से बदलाव ला रहे डॉ. प्रमोद

जमशेदपुर। एनएसएलआरआई जमशेदपुर में एयुएम रिसोर्स मैनेजमेंट के शिक्षक प्रो. प्रमोद कुमार पाधी को सूच्या मैनेजमेंट नुरु कहे जो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। दरअसल प्रो. प्रमोद अपने इन्वेस्टिव टीचिंग मेंथेड के लिए विद्यार्थियों में काफी लोकप्रिय हैं।

एक्सएलआरआई

- मैनेजमेंट के विद्यार्थियों को देते हैं
महाभारत-गीता का उदाहरण
- पढ़ाने के तरीके के लिए मिल
चुका है इन्वेंटिव टीचर अवार्ड



ਸ੍ਰੀ. ਅਮਰਿੰਦ ਕੁਮਾਰ ਸਾਖੀ

विश्वविद्यालय में कर्मिल लोकार्बिड है।
एक वैश्व आधुनिक और उच्च स्तरीय तकनीकी शिक्षण संस्थान में शिक्षक होने के अवकृष्ट्ये ये अपने विद्यार्थियों को विभिन्न मैनेजमेंट एक्टिविटीयों में सम्मिलित के लिए प्रयासावृत और नीति के उद्घाटनों का समार देते हैं। प्र. प्रोफेटर अपने विद्यार्थियों को महाप्रवृत्तता विभिन्न घटनाओं के बारे में बताते हैं और जो और नीति के समस्तुन शैलीको को कोलकर उन्हें हिन्दी में सम्प्रदाने हैं और विद्यार्थियों को मैनेजमेंट के प्र प्रदाने हैं।

PUBLICATION: Hindustan
DATE: 22 September 2019
EDITION: Jamshedpur
PAGE: 6

जैव विविधता का संरक्षण जरूरी : डॉ. वंदना



एक्सएलआरआई में शनिवार को व्याख्यानमाला को संबोधित करती पर्यावरणविद डॉ. वंदना शिवा और उपस्थित विद्यार्थी।

जमशेदपुर | वरीय संवाददाता

कृषि में विषाक्त रसायन और जीवाश्म ईंधनों का प्रयोग मिट्टी की उर्वरक क्षमता को नष्ट कर रहा है। इससे उपज कम हो रही है। अनाज का पोषक तत्व भी कम रहा है। मसलन कुपोषण जैसी बीमारियाँ तेजी से बढ़ रही हैं। ऐसी औद्योगिक कृषि से जैव विविधता नष्ट हो रही है।

कृषि में रसायनों का प्रयोग बंद कर हम जैव विविधता को संरक्षित कर किसानों में बढ़ती आत्महत्या को रोक सकते हैं। ये बातें पर्यावरणविद डॉ. वंदना शिवा ने शनिवार को एक्सपलआरआई के टाटा ऑडिटोरियम में कही। वे यहां एक्सपलआरआई की ओर से आयोजित छठवीं डॉ. वर्गीस कूरियन मेमोरियल व्याख्यान को बतौर मुख्य वक्ता संबोधित कर रही थीं।

આયોજન

- एक्सएलआरआई में डॉ. वर्गीस कूरियन मेमोरियल व्याख्यानमाला
- कृषि में रोकना होगा हानिकारक रसायनों का प्रयोग

वननेस वसेज वन परसेंट :
इकोलॉजिकल रिस्पॉन्स टू दि थ्रेट फॉर
प्लेनेट एंड थ्यूमेनैटी विषय पर डॉ.
शिवा ने कहा कि सहकारी डेवरी क्षेत्र के
उत्थान के लिए डॉ. कुरियन द्वारा दिये गये
सिद्धांत से पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा
मिल सकता है। इससे पूर्व मिलक मैनेज
ऑफ इंडिया कहे जाने वाले अमूल
इंडिया के संस्थापक डॉ. वर्गीस कुरियन
की याद में एक्सएलआरआई के फादर
अरुण ने ब्यांखानमाला का उद्घाटन
किया। वहाँ अतिथि डॉ. वर्गीस कुरियन

की बेटी निर्मला कुरियन, एक्सएलआरआई के निदेशक फादर पी क्रिस्टी एसजे, डीन एकेडमिक्स डॉ. आशीष के पाणि और फेसेज के चेयरपर्सन डॉ. मधुकर शुक्ला मौजूद थे। फादर पी क्रिस्टी ने डॉ. वंदना शिवा का स्वागत करते हुए सभी से उनका परिचय कराया।

कौन है डॉ. वंदना शिवा : डॉ. वंदना शिवा भारतीय दार्शनिक, पर्यावरण कार्यकर्ता और लेखिका हैं। दिल्ली निवासी डॉ. शिवा वैज्ञानिक और तकनीकी पत्रिकाओं में 300 से अधिक लेखों की रचनाकार भी हैं। 70 के दशक में उन्होंने अहिंसात्मक चिपको आंदोलन से जुड़कर पेड़ों की कटाई को रोकने के लिए मानव प्रकृति तैयार करने की पद्धति शुरू की थी। डॉ. वंदना कई व्याख्यान दे चुकी हैं।

PUBLICATION: Hindustan
DATE: 28 September 2019
EDITION: Jamshedpur
PAGE: 9

एक्सएलआरआई के पूर्व निदेशक को मिले दो अवार्ड



जमशेदपुर (वसं)। एक्सएलआरआई, जमशेदपुर के पूर्व निदेशक फादर एसजे इब्राहिम को एकेडमिक लीडरशिप के लिए ऑल इंडिया मैनेजमेंट एसोसिएशन

(आईमा) ने केवल नोहरिया अवार्ड से सम्मानित किया। इसके अलावा एआईएम संगठन ने आस्मा लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड प्रदान किया। एक्सएलआरआई के वर्तमान निदेशक फादर पी क्रिस्टी एसजे ने फादर एसजे इब्राहिम को बधाई दी।

PUBLICATION: Khabar Mantra
DATE: 22 September 2019
EDITION: Jamshedpur
PAGE: 4

सहकारिता कृषि से ही बचेगी मानवता और बच पायेंगे किसान: डॉ बंदना शिवा

■ वैश्विक अर्थव्यवस्था पर आघातों के 1 % का कटौत, दुनिया को कर रहे तबाह
■ ख्यात पर्यावरणविद् डॉ बंदना शिवा ने युवा एंबेडर्ग को किया संबोधित
■ एक्सएलआरआई का छात्र डॉ वर्गीस कूरियन स्मारक व्याख्यानमाला

खबर मन्त्र व्यूटो

जमशेदपुर। एक्सएलआरआई में पढ़ने वाले हजारों छात्रों के लिए शनिवार की शाम आंख खोलने वाली शाम थी। उनके सामने थी अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पर्यावरण एक्टिविस्ट और खाद्य सुरक्षा की पैरोकार डा बंदना शिवा ने कहा, आपको जानकर हैरानी होगी कि देहरादून में जब किसान 5 रुपये में 25 किलोग्राम टमाटर बेच रहे थे तो दूसरी ओर पेप्सी भारतीय आलू से बने चिप्स को प्रति 50 ग्राम पर 20 रुपये दाम वसूल रही हैं। उन्होंने दो टूक कहा कि

कैसे किसान कर्ज के जाल में फंस कर एक ओर आत्महत्या कर रहे हैं तो दूसरी ओर पेप्सी जैसी बहुराष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय कंपनियां किसानों की ही उपज से अगाध मुनाफा कमा रही हैं।

एक्सएलआरआई में छोटे डा वर्गीस कूरियन स्मारक व्याख्यानमाला को संबोधित करते हुए पर्यावरणविद् और खाद्य सुरक्षा की पैरोकार डा बंदना शिवा ने कहा, आपको जानकर हैरानी होगी कि देहरादून में जब किसान 5 रुपये में 25 किलोग्राम टमाटर बेच रहे थे तो दूसरी ओर पेप्सी भारतीय आलू से बने चिप्स को प्रति 50 ग्राम पर 20 रुपये दाम वसूल रही हैं। उन्होंने दो टूक कहा कि



व्याख्यानमाला को संबोधित करती डॉ बंदना शिवा।

सहकारिता प्रति व सामाजिक न्याय का नियम है जबकि बाजार प्रतियोगिता एक कृत्रिम संरचना है जो दुनिया में अभाव व विवाद का निर्माण करती है। व्याख्यानमाला की अध्यक्षता स्व डा वर्गीस कूरियन की सुपुत्री डा निर्मला

कूरियन कर रही थी। वर्ननस वर्सेस द वन परसेंट इकोलोजिकल रिसर्चास टू द थ्रेट फोर प्लेनेट एंड इंडस्ट्री विषय पर बोले हुए उन्होंने डॉ वर्गीस कूरियन के योगदान को याद किया। उन्होंने कहा कि सहकारी डेयरी को विकसित करने

के लिए जो सिद्धांत और विचार डॉ वर्गीस कूरियन के थे वहीं उनके (डॉ बंदना शिवा के) लिए मूलमंत्र बने। ये सिद्धांत न्याय व सतत व्यवस्था से जुड़े थे। डॉ कूरियन का आंदोलन सहकारिता पर आधारित था न कि प्रतियोगिता पर। उन्होंने छोटे उत्पादकों पर फोकस किया और विश्व की सबसे बड़ी डेयरी अर्थव्यवस्था खड़ी कर दी।

छोटे कृषकों के लिए है नवदन्ता मूवमेंट : अपने नवदन्ता मूवमेंट के बारे में बताते हुए डा. बंदना शिवा ने कहा कि यह छोटे किसानों के लिए है। औद्योगिक कृषि आधारित रसायन कृषि भूमि को नष्ट कर रहे हैं। जल संकट बढ़ रहा है और पर्यावरण एक चुनौती बनी हुई है।

PUBLICATION:Mail Today
DATE:10 September 2019
EDITION:New Delhi
PAGE:20

■ XLRI'S CAREER COUNSELLING FAIR

SAMARTHYA, a student body at XLRI recently organised a Career Counselling Fair for school students in Jamshedpur. Steered by Ronald D'Costa, a founding member of Samarthya and an alumni of XLRI and Chief Mentor Fr. Francis Peter, XLRI, the event witnessed participation by many professionals and counsellors. Around 500 students and 50 parents of local schools took part in the Career Counselling Fair. Samarthya organised the Career Counselling Fair with the aim of providing guidance to school students and



their parents about various career options available to them from professionals having first-hand information of the field. The event is designed so as to help students make an informed decision about their career choice by collecting information about different fields of their interest at a single venue.

PUBLICATION:Mid Day
DATE: 22 September 2019
EDITION: Mumbai
PAGE:15

Academician first. Politician later

Cong's Prof Gourav Vallabh who went viral after he challenged BJP's Sambit Patra with a '5 trillion' question on fighting the tough fight as member of the Opposition

JANE BORGES
jane.borges@mid-day.com

FOR months now, Ramit Verma, creator of Peeling Human, has been taking on the establishment in hilarious meme videos, which mock the antics of the "desh bhakta" and "Godi media". Verma rarely makes a hero out of anyone, except for his home favourite, journalist and Ramen Magazine Award winner Ravish Kumar. Last week, however, a surprise Candidate No. 2 emerged in Professor Gourav Vallabh, the national spokesperson of the Indian National Congress. A seven minute-long video titled Sambit Patra (Cong) versus Sambit Patra (BJP), uploaded by Verma, shows Vallabh taking down the BJP's media panelist Patra one question at a time, in a five Hindi news channel debate on the completion of 100 days of the Modi government. "Ishbatoo, trillion mein kaise zeroes hote hain?" Vallabh is seen asking Patra in the video, referring to PM Narendra Modi's plans to make India a \$5 trillion economy by 2024. Not only did Patra draw a blank, his silly whataboutism made him the butt of Internet jokes. Vallabh, on the other hand, became a social media star overnight.

"I have done better debates before. To be honest, I was only doing my job," admits an amused Vallabh in a telephonic interview from Gurugram. "As a professor [of finance], it irritated me to end to constantly hear the ruling party throw this five trillion figure at the janta. Also, how is this figure going to change your life or mine? My reaction was instinctive. It didn't come from a place of testing the IQ of the gentleman who I was debating with. I just wanted to convey how ill-prepared he was," adds Vallabh, who says he researched for at least six hours, before participating in any panel or media discussion.

His CV makes him a natural candidate to question the government on its economic policies. A certified financial risk manager, 42-year-old Vallabh teaches finance at XLRI, Jamshedpur—one of the country's premier B-Schools. Apart from authoring several publications, he has also worked at Pune's National Institute of Bank Management, a think-tank affiliated with the RBI and was the director of Institute of Chartered Accountants of India in New Delhi.

Hailing from a family of academicians, teaching was always part of Vallabh's plan. "One of the reasons I didn't take up a hardcore corporate job, although, I had all the qualifications for it," Politics, he says, happened when the environment in the country began to change. In 2017, while the professor was in the US for a brief teaching programme, news of lynching by cow vigilantes back home disturbed him enough to write a letter to former Congress president Rahul Gandhi and senior party leader



PIC/SURESH KARKERA

'We have suggested so many reforms to remonetise the country, but nothing is being done. You ask them [the ruling party] anything, and they chant, 'Bharat Mata Ki Jai!'

Randeep Surjewala, asking if he could contribute to the party in any way. "I believe in a free-liberal, intellectual and secular society. The party that was purely aligned with my ideology and thought process was the Congress," he says. Surjewala immediately wrote back to him. "After we met, and I shared my ideas with him, things moved very fast," he recalls.

On January 31, last year, Vallabh was appointed national media panelist. By the end of year, he was on the roster of key national spokespersons from the party. "When I joined the Congress, my goal was clear. My political ambition has never been to become something. If that was the case, I wouldn't have joined a party that was in the Op-

position. I am a professor at XLRI and I am very satisfied with my job. I wanted to do something for the society," he says. "I feel sad when senior leaders such as Jayant Sinha garlanded lynchers [in 2018, the former union minister got eight people convicted in the Ramgarh lynching case in Jharkhand at a BJP event and garlanded them]. There have been debates where people have told me: 'Ja masjid chala ja'. This is not the kind of India, I was born into," Vallabh says he is as much a Hindu, as anyone else. "But religion is very personal. Why should I go in front of a camera and say I am a great devotee of Lord Ram?"

As spokesperson, he wants to play the role of an effective Opposition. "Congress has always worked at being a constructive Opposition. We also have to be able to communicate the work that we are doing as a party. Unfortunately, we are not able to disseminate our ideology to the last person in society. The government, he says, has taken complete control of this narrative. "The economy is currently in doldrums. And they [the government] won't listen to us [the Opposition]. We have suggested so many reforms to remonetise the country, but nothing is being done. You ask them anything, and they chant, 'Bharat Mata Ki Jai!'. India has a bright career, but we are falling behind, because of their mistakes."

PUBLICATION: Pioneer
DATE: 3 September 2019
EDITION: Jamshedpur
PAGE: 2

XLRI launches theme of its annual festival

PNS ■ JAMSHEDPUR

XLRI's annual cultural, sports, and management festival 'Ensemble-Valhalla' is all set to take place from November 1 to 3. The institute celebrated the theme launch event of the fest – IGNITO which saw massive participation from students and faculty alike.

The theme of the fest this year is 'Break Free' which will celebrate innovation and encourage people to break free from the shackles which might be holding them back from bringing the innovator in them to the fore.

With the rapid dynamics of business changing constantly, innovation is the only way forward to ensure that companies keep thriving.

The theme is designed in a way that the budding managers feel inspired to innovate. The event saw participation from all the student committees on campus who organised differ-



ent activities for the students.

The banner of the theme for Ensemble-Valhalla was unveiled amid huge cheers and the first event of Ensemble-Valhalla completed after the release of the sky lanterns which illuminated the night sky

signifying the beginning of a new edition of Ensemble-Valhalla is the annual cultural, sports, and management fest of XLRI.

The fest will take place on the 1st-3rd of November.

XLRI's flagship fest

Biswa Kalyan Rath, and Zakir Khan. The multifaceted fest is expected to be a grand celebration of spirit and character encompassing the values and integrity of India's oldest business management school.

PUBLICATION: Pioneer
DATE: 5 September 2019
EDITION: Jamshedpur
PAGE: 2

Vandana Shiva to address 6th 'Dr Verghese Kurien Memorial Oration'

PNS ■ JAMSHEDPUR :

Noted scholar and environmental activist Vandana Shiva will address the 6th 'Dr Verghese Kurien Memorial Oration on Sustainable Development' on September 21 at XLRI Campus, Jamshedpur.

Fr. P. Christie director of XLRI said: "Dr. Verghese Kurien was an ingenious thinker, a revolutionary and a social entrepreneur who ideated the world's biggest agricultural development programme. It was his 'billion-litre idea' which made dairy farming India's largest self-sustaining industry, with benefits of employment, incomes, credit, nutrition, education, health, gender parity & empowerment, breaking down caste barriers and grassroots democracy and leadership. XLRI instituted the oration in his memory with the aim to commemorate his legacy through propagating and disseminating the idea of an empowered, equitable and sustainable society."

"Dr. Verghese Kurien Memorial Oration on Sustainable Development is our humble initiative to pay tribute to the great visionary," said Prof. Madhukar Shukla,



Chairperson of XLRI's Fr Arrupe Center for Ecology & Sustainability. "With this annual oration, we aim to inspire and inculcate values of entrepreneurial spirit in budding business leaders and social entrepreneurs", he added.

Dr. Vandana Shiva is an Indian physicist and social activist. She founded the Research Foundation for Science, Technology, and Natural Resource Policy (RFSTN), an organisation devoted to developing sustainable methods of agriculture, in 1982.

She worked on grassroots campaigns to prevent clear-cut logging and the construction of

large dams. She was perhaps best known, however, as a critic of Asia's Green Revolution, an international effort that began in the 1960s to increase food production in less-developed countries through higher-yielding seed stocks and the increased use of pesticides and fertilizers. The Green Revolution, she maintained, had led to pollution, a loss of indigenous seed diversity and traditional agricultural knowledge, and the troubling dependence of poor farmers on costly chemicals. In response, RFSTE scientists established seed banks throughout India to preserve the country's agricultural heritage while training farmers in sustainable agricultural practices. In 1991, Dr. Shiva launched Navdanya.

The project, part of RFSTE, strove to combat the growing tendency toward monoculture promoted by large corporations.

She has also launched Diverse Women for Diversity, an international version of Navdanya, and opened Bija Vidyaapeeth, a school and organic farm offering month-long courses in sustainable living and agriculture, near Dehra Dun in 2001.

PUBLICATION: Pioneer

DATE: 23 September 2019

EDITION: Jamshedpur

PAGE: 2

XLRI holds 6th Verghese Kurien Memorial Oration

PNS ■ JAMSHEDPUR

Xavier School of Management organised the 6th 'Dr Verghese Kurien Memorial Oration on Sustainable Development' on Sunday. Organised under the aegis of Fr Arrupe Center for Ecology and Sustainability (FACES), XLRI, in memory of the founder of Amul Dr. Verghese Kurien, otherwise known as "the Milkman of India", the oration aims to provide a platform to listen to and learn from thought leaders, social entrepreneurs, development sector professionals and policy makers who have made a significant contribution to the idea of an empowered, prosperous and sustainable society.

This year, Dr. Vandana Shiva, eminent Environmental Activist & Ecofeminist delivered the oration on the topic "Oneness vs The 1%: Ecological responses to the threat for planet and humanity".

The event was also graced by Nirmala Kurien, daughter of Dr Verghese Kurien with Fr. P. Christie, S. J., Director of XLRI, Dr. Ashis K. Pani, Dean (Academics), XLRI, Dr. Madhukar Shukla, Chairperson, Fr. Arrupe Center for Ecology & Sustainability (FACES), XLRI and other dignitaries.

In her speech, Dr. Vandana



Speakers at sixth Verghese Kurien Memorial Oration

Shiva observed, "The principles and ideas that shaped Dr Kurien's contribution to the cooperative dairy sector are principles and ideas that have shaped my work on seeds, biodiversity and agro-ecology. These are principles of justice and sustainability." She pointed out in her address that Dr Kurien's movement was built on Cooperation and not Competition. "Cooperation is the law of nature and justice in society, cooperation creates

abundance and peace. Competition is an artificial construct that creates scarcity and conflict. Dr Kurien focused on the small producers and created the largest dairy economy of the world. He did not impose the violence of centralised factory farms," she added.

Elaborating about her 'Navdanya' movement, she said that the 'Navdanya' movement focuses on the small seed, and the small farmer, "Industrial

agriculture based on fossil fuels and chemicals has destroyed soil, contributed to water emergency and climate emergency, which has led to hunger, malnutrition and chronic diseases. Navdanya's work has shown that by conserving our biodiversity and practicing agro-ecology, we can remove hunger, end farmers' suicides, and stop the spread of toxics and chemicals which are killing biodiversity and spreading cancer."

In his address, Fr. P. Christie, S. J. Director of XLRI, welcomed Dr. Vandana Shiva and elaborated on her contributions and movements for food security. He said, "We are indeed privileged to have with us Dr Vandana Shiva, a well-known environmental activist, food sovereignty advocate, and an active participant in the global solidarity movement known as the alter-globalisation movement. She has actively promoted biodiversi-

We are indeed privileged to have with us Dr Vandana Shiva, a well-known environmental activist, food sovereignty advocate, an active participant in global solidarity movement

ty and indigenous knowledge to increase agricultural productivity, nutrition and farmer's income. She has devoted her life to give life to earth and the poor who have been affected."

Prof. Madhukar Shukla, Chairperson of XLRI's Fr Arrupe Center for Ecology & Sustainability (FACES) said in his address, "FACES at XLRI was established with the mission to promote practices and policies, which will help create an environmentally, socially and economically sustainable and just society." "The Oration is to commemorate the memory of Dr Verghese Kurien, since, needless to say, that there is no better model for sustainable development - both in terms of his life and legacy - than Dr Kurien. It is an honour to have Dr. Vandana Shiva, a noted environmentalist and ecofeminist, with us today to deliver the 6th Dr Verghese Kurien Oration this year," Prof. Madhukar Shukla further added.

PUBLICATION: Pioneer
DATE: 25 September 2019
EDITION: Jamshedpur
PAGE: 3

'Cycles' of change take over youths in Steel City

BICYCLES FIND THEIR WAY BACK ON STREETS WITH LAUNCH OF NEW CYCLING CLUBS

PARVINDER BHATIA ■
JAMSHEDPUR

Children and grown-ups pedalling through tree-lined streets of Jamshedpur are a common sight these days. Thanks, mostly, to activities of cycling clubs that have cropped up in the city in the last few years, bicycles are becoming a familiar sight on the roads again.

With growing passion about fitness in the Steel City, cycling has brought together the young and old to pedal long and wide across the city. "Bicycles used to dominate the streets during my college days. Then motorbikes



Fitness expert and founder of 'Steel Cyclos' Sushanta Singha with his team member at Sonari in Jamshedpur on Tuesday.

PNS



Members of 'Steel Cyclos' during a ride at Marine Drive at Sonari in Jamshedpur on Tuesday.

PNS

zoomed into the scene and bicycles made a sudden exit from our lives. In the last few years or so, many enthusiasts have taken up cycling in a big way," said Satbir Singh, a famous cyclist. To bring home the globally popular, ever-growing culture of cycling clubs, a bunch of enthusiasts

expert Sushanta Singha has also formed a new club 'Steel Cyclos'. For him, cycling is not just a way to maintain fitness or reduce pollution, but a way to rejuvenate her mind, bond with people and gain new friends. "We are promoting cycling in a big way.

We are planning to organise a mega cycling event in the city so that we can motivate people to start cycling. The event is being planned next month," said Singha.

Very recently a group of youths also took a cycle trip from JRD Tata sports complex to Khandarbera to spread awareness on environment. Fitness organization, Faststep

in association with cycling club Steel Cyclos organised the event. The participants covered a distance of approximately 34 km early morning. "We wanted to remind people and raise awareness about the perks of cycling in their weekly schedule.

Not only does it keeps you fit physically it also rejuvenates and keeps you agile mentally. On the other hand we spread message on to save water and reduce pollution," said Aparajita Apra, a young participant from Faststep.

The people were also excited to interact with cyclists as they spoke about their responsibilities in protecting

the environment and maintaining green protocol. Under the banner of SIGMA (Social Initiative Group for Managerial Assistance) a committee at XLRI, students also have a Campus Cycle Project. Started with a pilot run of 36 cycles to commute between the old and the new campus, the team has now 76 active members.

A student of XLRI said that riding a bicycle strengthens mainly the leg muscles but also has beneficial effects on the cardiovascular system.

It is the best form of fitness. Cycling not only helps maintain fitness but is a great way to experience nature.

PUBLICATION: Pioneer
DATE: 22 September 2019
EDITION: Jamshedpur
PAGE: 2

Former director of XLRI conferred with academic leadership award

PNS ■ JAMSHEDPUR

Fr. Abraham, former director, XLRI-Xavier School of Management has been honoured by All India Management Association (AIMA) with "AIMA-Kewal Nohria Award for Academic Leadership in Management Education 2019". Abraham was also conferred the 'AIM-ASMA Lifetime Achievement Award' at the 3rd ASMA Annual Convention & Awards 2019.

He has been the longest serving director of XLRI. His total tenure as director spanned for over 16 years across two terms. He himself is also an alumnus of XLRI.

P Christie, director, XLRI congratulated Fr. Abraham and commented, "Fr. E. Abraham has been a true leader not only of XLRI but also of India's management academia. He has been an inspiration to the entire XL family and we have been immensely fortunate to follow his legacy. Our sincere congratulations to him for his



Fr. Abraham, former Director, XLRI PNS

accomplishments." Abraham is highly regarded as a champion of India's management academia and an eminent thought leader in academic governance who has immensely contributed to the field.

He has been the Founder-Secretary of the National HRD Network and the Founder-President of Indian Association of Autonomous Business Schools. He is also on the boards of International Association of Jesuit Business

He has been longest serving Director of XLRI. His total tenure as director spanned for over 16 years across two terms. He is also an alumnus of XLRI

Schools and Association of Asia Pacific Business Schools. He has been the President of the Association of Indian Management Schools and a member of the board at IRMA. He has also been member of National Board of Accreditation and member of All India Board of Management Studies.

He is presently serving as a member of board of governors at many Indian and foreign business schools, like XLRI Jamshedpur, St Xavier University Kolkata, St Xavier University Bhubaneswar and Asian institute of Management, Manila. He has received numerous accolades for his contribution to management education.

PUBLICATION: Prabhat Khabar, City

DATE: 22 September 2019

EDITION: Jamshedpur

PAGE: 1

एक्सएलआरआई. डॉ वर्गीस कुरियन ऑरेशन में संबोधित करते हुए बोलीं पर्यावरणविद डॉ वंदना शिवा

58% संपत्ति पर एक प्रतिशत लोगों का कब्जा

लाइफ रिपोर्टर जमशेदपुर

देश में असमानता की खाई लगातार चौड़ी हो रही है, हालात यह है कि अंग्रेजी हुकूमत के वक्त देश के एक फीसदी लोगों के पास देश की कुल 22 फीसदी संपत्ति थी, लेकिन अब स्थिति ऐसी है कि देश की 58 फीसदी संपत्ति पर सिर्फ एक फीसदी लोगों का कब्जा है। भारत के केवल 57 अरबपतियों के अब कुल 216 अरब डॉलर की संपत्ति है जो देश की करीब 70 प्रतिशत आबादी की कुल संपत्ति के बराबर है, वैश्विक आधार पर यही स्थिति आठ अरबपतियों की है जिनके पास पूरे विश्व की 50 प्रतिशत आबादी के बराबर संपत्ति है। भारतीय अरबपतियों की संपत्ति में 2018 में प्रतिदिन 2,200 करोड़ रुपये का इजाफा हुआ है, देश के शीर्ष एक प्रतिशत अमीरों की संपत्ति में 39 प्रतिशत की वृद्धि हुई, जबकि यह स्थिति उस देश की है जहां हर चौथा व्यक्ति भुखा है और हजारों किसान कर्ज की वजह से आत्महत्या कर रहे हैं, जिस प्रकार से अमीर और गरीबों के बीच की खाई चौड़ी हो रही है, वह युवाओं के लिए गंभीर चुनौती है। आर्थिक असमानता अन्धधुंध पैदा करती है, उक्त बातें पर्यावरणविद डॉ वंदना शिवा ने कही, वे एक्सएलआरआई में आयोजित डॉ वर्गीस कुरियन ऑरेशन के दौरान बतौर मुख्य वक्ता सभी को संबोधित कर रही थी, उन्होंने कहा कि भारत में अरबपतियों की संख्या में भारत का दुनिया में तीसरा स्थान है, फिलहाल भारत में 119 अरबपति (बिलियनर) हैं, जिनके 2027 तक बढ़कर 357 होने की उम्मीद है, उन्होंने इससे पूर्व पद्मश्री डॉ वर्गीस कुरियन की बेटी निर्मला कुरियन, एक्सएलआरआई के डायरेक्टर फादर पी क्रिस्टी, डॉन आशीष पाणी, सीनियर प्रोफेसर मधुकर शुक्ला ने संयुक्त रूप से दोष प्रज्वलित कर कार्यक्रम की शुरुआत की, प्रोफेसर मधुकर शुक्ला ने अपने संबोधन में जहां डॉ कुरियन ऑरेशन शुरू करने के पीछे के उद्देश्यों की जानकारी दी वहीं फादर क्रिस्टी ने कहा कि पर्यावरण संरक्षित करने के लिए हर किसी को सामूहिक रूप से अपनी जिम्मेदारियों को समझना होगा,

को ऑपरेटिव मॉडल से होगा देश का समग्र विकास: डॉ वंदना शिवा ने कहा कि डॉ वर्गीस कुरियन ना सिर्फ क्षेत्र क्रांति के जनक थे बल्कि उन्होंने देश में किस प्रकार समग्र विकास किया जाये, उस सोच को जन-जन तक पहुंचाने वाले थे, सिर्फ एक



डॉ वंदना शिवा के बोल

- पिछले साल यूपी में पांच रुपये में 20 किलो आलू बिका और उसी आलू से मल्टीनेशनल कंपनी बिस्कि बना कर 50 ग्राम का लेती है 20 रुपये, इससे किसान का कभी विकास नहीं होगा,
- अगर हमने अपने खान-पान की आदत में सुधार नहीं किया तो भुगतने होंगे गंभीर नतीजे,

व्यक्ति के अमीर होने से कभी समाज का भला नहीं होने वाला है, उन्होंने कहा कि मौजूदा पीढ़ी कृषि से दूर हो रही है, लेकिन आने वाले दिनों में यही वह सेक्टर होगा जिसमें कभी मंदी नहीं आयेगी, **यूरिया के इस्तेमाल से पर्यावरण पर पड़ रहा है कुपभाव:** अपने व्याख्यान में डॉ वंदना शिवा ने कहा कि आज खेतों में लोग जम कर यूरिया का इस्तेमाल कर रहे हैं, यह ना सिर्फ पर्यावरण के लिए बल्कि स्वास्थ्य के लिए बेहद हानिकारक है, कहा कि यूरिया के इस्तेमाल से जिस फसल को आप तैयार करते हैं उसमें पानी ज्यादा लगता है, साथ ही यूरिया के निर्माण के लिए ग्रीन हाउस गैस



- खेतों में ट्रैक्टर से खेत की मिट्टी को भी होता है नुकसान,
- बायोडाइवर्सिटी के लिए लोगों का को ऑरेशन है आवश्यक, बगैर साइड प्रयास के कुछ भी संभव नहीं
- फेसबुक लोगों के पर्सनल डेटा को लीक कर रहा है,
- नेचर इन द फर्स्ट टीचर, हर चीज परिवर्तित हो सकता है,
- सोसाइटी में निगेटिव एनर्जी बढ़ रही है,

का प्रोड्यूस होता है जो पर्यावरण के लिए नुकसानदायक होता है, **चाउमीन बन गया है नेशनल फूड, 75 फीसदी लोगों के बीमार होने के कारण है जंक फूड:** वंदना शिवा ने भारत के लोगों के खाने-पाने की आदतों में तेजी से हो रहे बदलावों पर चिंता जतायी, इस मौके पर उन्होंने कहा कि अमेरिका में सबसे ज्यादा जंक फूड का प्रोडक्शन होता है जो धड़ल्ले से भारत में पहुंच रहा है और लोग उसे स्टेटस सिंबल के तौर पर इस्तेमाल भी करते हैं, स्थिति यह है कि अब चाउमीन नेशनल फूड बन गया है, देश के लोग पिज्जा, बर्गर या फिर अन्य जंक फूड खाकर सूगर



के मरीज हो रहे हैं, उनके किडनी खराब हो रहे हैं, मोटापा की समस्या से ग्रसित हो रहे हैं, लेकिन धड़ल्ले से लोग इसे अपना रहे हैं, लोगों के फूड हैबिट में अगर सुधार नहीं होती है तो बीमारी में कमी नहीं आने वाली,

PUBLICATION: Prabhat Khabar

DATE: 24 September 2019

EDITION: Jamshedpur

PAGE: 17

एक्सलर्स ने दी इमोशनल इंटेलिजेंस को बढ़ावा देने की सीख

जमशेदपुर. एक्सएलआरआई के टीम सामर्थ्य की ओर से रविवार को एक कॉन्फ्रेंस का आयोजन किया, जिसमें शहर के रामकृष्ण मिशन व केरला पब्लिक स्कूल के कुल 100 बच्चों के साथ ही करीब 25 शिक्षक-शिक्षिकाओं को इमोशनल

- 100 स्कूली बच्चों व 25 शिक्षक-शिक्षिकाओं ने सामर्थ्य की कॉन्फ्रेंस में लिया हिस्सा
- इंटेलिजेंस की जरूरतों के बारे में जानकारी दी गयी. सामर्थ्य टीम के सेक्रेटरी राहुल शर्मा ने बताया कि टीम सामर्थ्य की ओर से स्कूली बच्चों को एक्सएलआरआई के फैकल्टी व स्टूडेंट्स बताते हैं कि वे करियर निर्माण के साथ ही मौजूदा दौर में किस प्रकार अपने आप को मानसिक रूप से समृद्ध कर सकते हैं. एक्सएलआरआई के प्रोफेसर डॉ सुनील कुमार

षाड़ंगी ने कहा कि पढ़ाई के लिए यह जरूरी है कि टीचर व स्टूडेंट्स के बीच बेहतर कम्यूनिकेशन और भावनात्मक लगाव हो. एक्सएलआरआई की छात्रा आकांक्षा ने सभी को मल्टी टास्किंग बनने के लिए प्रेरित किया.

PUBLICATION:Prabhat Khabar
DATE: 28 September 2019
EDITION: Jamshedpur
PAGE: 22

एक शाम झारखंड पुलिस के नाम सीजन -3 कार्यक्रम आज

एक्सएलआरआइ में देवाशीष और सौरव बिखेरेंगे जलवा

लाइफ रिपोर्टर@जमशेदपुर

सनराइज इवेंट मैनेजमेंट के तत्वावधान में 28 सितंबर को एक्सएलआरआइ ऑडिटोरियम में एक शाम झारखंड पुलिस के नाम सीजन 3 कार्यक्रम का आयोजन शाम छह बजे से होगा. यह जानकारी मैनेजमेंट के चेयरमैन भरत सिंह ने दी. वे शुक्रवार साकची के एक होटल में प्रेस वार्ता को संबोधित कर रहे थे. उन्होंने कहा कि कार्यक्रम में बॉलीवुड के पार्श्वगायक देवाशीष दासगुप्ता और मोटू-पतलू फेम सौरभ चक्रवर्ती अपना जलवा बिखेरेंगे. कार्यक्रम के दौरान झारखंड में शहीद हुए पुलिसकर्मियों और अधिकारियों के परिजनों को सम्मानित किया जायेगा. साथ ही उत्कृष्ट कार्य करने वाले पुलिस पदाधिकारियों को भी सम्मानित किया जायेगा. कार्यक्रम में एसएसपी अनूप बिश्वे और डीआइजी मनोज कुमार सिंह मुख्य अतिथि होंगे. सिटी एसपी सुभाष चंद्र जाट और सीआइएसएफ के सैनियर कमांडर हरिओम गांधी विशिष्ट अतिथि रहेंगे. आरक्षी उपाधीक्षक, विभिन्न थानों के थानेदार मौजूद रहेंगे. कार्यक्रम में प्रवेश पास जरिये होगा. मौके



खत्म हो चुका है पुराने गीतों का दौर : देवाशीष

शोला शबनम, अंदाज अपना-अपना, आंसू बने अंगारे जैसी फिल्मों के पार्श्वगायक और अमृतवाणी को आवाज देने वाले देवाशीष ने कहा कि पार्श्वगायन से अधिक ख्याति उन्हें भजन गाकर मिली. अब पुराने गानों का दौर खत्म हो चुका है. नये जेनरेशन के हिसाब से गीत लिखे जा रहे हैं और संगीत भी बन रहा है. उन्होंने कहा कि आज के गाने रुढ़ तक नहीं पहुंचे रहे. इसलिए अधिक दिनों तक जेहन में नहीं रहते. उन्होंने कहा कि 30 साल बाद जमशेदपुर आकर अच्छा लगा रहा है.

कार्टून के जरिये बच्चों को देता हूं संदेश : सौरव

कार्टून शो मोटू-पतलू को आवाज देने वाले जमशेदपुर निवासी सौरव ने कहा कि वे पहले स्क्रिप्ट लिखते हैं. फिर उसे सजाते हैं और अंत में आवाज देते हैं. उन्होंने कहा कि वे आम जनता की आवाज उठाते हैं. जिसे एनिमेशन में डालकर बच्चों का मनोरंजन करते हैं. उनका दावा है कि वे अब तक 280 तरह की आवाज निकाल चुके हैं. कार्टून के जरिये दिखायी जाने वाली हिंसात्मक चीजों को वे गलत मानते हैं. वे कार्टून के जरिये बच्चों को छोटा-छोटा संदेश देते हैं. वर्तमान में वे कार्टून शो गूटू-बूटू बना रहे हैं.

पर कमल किशोर अग्रवाल, परशुराम मिश्रा, संजीव मिश्रा व अन्य मौजूद रहे.

PUBLICATION:Prabhat Khabar
DATE: 28 September 2019
EDITION: Jamshedpur
PAGE: 23

फादर इ अब्राहम को आसमां लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड

■ एकेडमिक लीडरशिप इन मैनेजमेंट एजुकेशन में उल्लेखनीय योगदान के लिए किया जायेगा सम्मानित

जमशेदपुर. एक्सएलआरआइ के पूर्व डायरेक्टर फादर इ अब्राहम को



एकेडमिक लीडरशिप इन मैनेजमेंट एजुकेशन के क्षेत्र में उल्लेखनीय

योगदान के लिए उन्हें यह अवार्ड दिया जायेगा. इसके साथ ही उन्हें थर्ड आसमां एनुअल कन्वेंशन एंड अवार्ड समारोह के दौरान आसमां लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड दिये जाने की घोषणा की गयी है. संस्थान के वर्तमान निदेशक फादर क्रिस्टी ने उन्हें बधाई दी और कहा कि जिस प्रकार से मैनेजमेंट के क्षेत्र में फादर इ अब्राहम का योगदान था, वे इस सम्मान के वास्तव में हकदार थे. उन्होंने इससे दूसरे लोगों को भी प्रेरणा मिलने की बात कही. गौरतलब है कि फादर इ अब्राहम ने एक्सएलआरआइ में बतौर डायरेक्टर दो टर्म में 16 साल तक अपनी सेवाएं दी है.

He only says the move to prosper is to be innovative," said Dalal. Sanyal, Minister of State for Environment, Power and Climate Change, was speaking at the 2nd AIRMA's 40th National Management Conference (NMC). The minister urged the audience to make efforts towards making the Earth plastic-free.

Speaking on the theme "Creative Business Models for a Green India," Aiyaz said, "How India drives innovation innovatively will decide its growth." He further said, "Fundamental of Indian economy is innovation and innovation for growth is the need of the hour. He added that India is a great country for 'rugal innovation'.

Rajivshankar Arora, President, AIRMA & Chairman, Ambika Heeda Institute of Management, said that he shared his views on India becoming an innovation nation. He said that the two days NMC generated important thoughts on how India can march towards becoming a \$10 trillion economy.

Sharing his views, Sanjay Grewal, Convention Chairman & Chairman, KIP-Sanyal Group said that

India needs to encourage disruptive creativity in order to foster growth, adding that building an innovative nation needs best business decisions. Speaking at the inauguration, Dr. P. S. Prasad, AIMA's Chairman and Managing Director, Kieruloff Brothers Ltd said that Indian companies are now becoming aggressively innovative. Dr. P. S. Prasad, Vice President & Managing Director, KP Paper Ltd while introducing the keynote speakers said 'India can play a central role in the emerging new world order'.

Dr. P. S. Prasad addressing the IMC, Rukhla Sahi, Director General, All India Management Association said, "The vision of a new India is now accepted and respected by the world".

AIMA awards were also presented at the occasion. The following were the AIMA Awards for Academic Leadership in Management Education 2019 were presented to Dr. P. Abraham, Former Director, **KJ Somaiya Institute of Management Studies**, Mumbai (Award Year 2019) was presented to Tatyana Company Limited, AIMA Best **IMA Awards 2019-19** were also given away.

SANJIV GOENKA
Chairman, IIP-Sanjiv Goenka Group

BABU GAURABDAS NOOTAS
President, AIMA

[illegible]

Members List
of Indian
Air Force &



(L-R) Rekha Sethi, Director General, All India Management Association; Sanjay Kishor, Senior Vice President, AIMA & Chairman and Managing Director, Kirlaskar Brothers Ltd; Suresh Goenka, Convention Chairman & Chairman, BP-Savli Goukta Group, Sabal, Surpuri, Minister of State for Environment, Forest and Climate Change, Government of India; Anilish Kant, CEO, NITI Aayog; Harshvardhan Neotia, President, AIMA & Chairman, Ambika Neotia Group and Harsh Pad Singhania, Vice President, AIMA & Vice Chairman & Managing Director, JN Paper Ltd



Amit Shah, Minister of Home Affairs, Government of India addressing ANMA's 46th National Management Convention



Harshvardhan Neebia, President, ATMA & Chairman, Ambuja Nodia Group; Nitin Gadkari, Minister of Road Transport & Highways; Micro, Small & Medium Enterprises, Government of India



Sanjay Guenka, Convention Chairman & Chairman, NP-Sanjay Guenka Group
and Ravi Shankar Prasad, Minister of Law and Justice: Communications:
Ravi Shankar Prasad, Minister of Law and Justice: Communications:



Sanjay Goenka, Sanjay Kinkar, Kumar Mangalam Uria, Harshvardhan Neotia and
Harsh Pillai Sankharia



(L-R) Sunil Jain, Managing Editor, The Financial Express; Suresh Gupta, CEO & Editor, Dainik Jagran; Sunil Karol Munjal, Past President AIMA & Chairman, Ibero Education; TK Anand, Consulting Editor, The



Titan Company Limited received by
Marish Chawla, Regional Business
Manager, Jewellery - Titan Company

(L-R) Rekha Sethi, Director General, All India Management Association; Sanjay Kishore, President, ABMA & Chairman and Managing Director, Kishore Brothers Ltd; Harshadhaan Nodia, Immediate Past President, ABMA & Chairman, Ambika Neelika Group; Harsh Pat, Senior Vice President, ABMA & Vice Chairman & Managing Director, CK Paper Ltd; CK Rangaswami, Vice President, ABMA and Chairman & Managing Director, Cawthra Pet Ltd and Nandini Sawhney, Treasurer, ABMA and Vice Chairman & Managing Director, Tamil Textiles Limited.

Sanjay Kishore, Chairman & Managing Director, Kishore Brothers Ltd has been elected the new AIMA President by AIMA Council. He succeeds Harmandhar Nodia, Chairman, Arjun Singh Group, Hoshiarpur, Punjab, Director, JK Paper Mills, Director, JK Cement, Chairman & Managing Director, JK Paper Ltd, the new Senior Vice President of AIMA, e-

Vice President, AIMA & Chairman and Managing Director, Kirloskar Brothers Ltd delivered the welcome address and said that succeeding in this digital world will need new know-how. The keynote address was delivered by TV Mohandas Pai, Chairman, Manipal Global Education Services who gave an enthralling presentation on how India can leverage AI for disruptive growth. He spoke on connectivity boom in terms of network impact.



ABHISHEK NATH

SYDNEY

CEO, Iacora Corporate Services Pvt. Ltd; Vinod Mehta, Chief Brand Officer, Let'sWorkare; Mohit Gupta,

[illegible]

During the session 'Winning in the Digital World', Sanjay Karkada, Senior Vice President, AIMA & Chairman and Managing Director, Krikskar Brothers Ltd delivered the welcome address and said that succeeding in this digital world will need new know-how. The keynote address was delivered by TV Mohandas Pai, Chairman, Manipal Global Education Services who gave an enthralling presentation on how India can leverage AI for disruptive growth. He spoke on connectivity boom in terms of network impact.



DR Ashish Math, Managing Director and Co-Founder of India L&E, Syna Oshwagars, Chennai

A group of people sitting on a stage during a panel discussion.

Brett Gay, Managing Director, Transport for London, and Martin Sharr, Chief Curator, City Book Leaders and Kar



(L-R) P. Balaji, Chief Regulatory and Corporate Affairs Officer, Vedanta Idea Ltd; TV Mohandas Reddy, Chairman, Mahatma Gandhi Education Foundation and Policy, NCHS, Greater Noida



©R. Atchannath, Managing Director, and CEO, Ixora Corporate Services Pvt. Ltd; Vinod Agarwal, Managing Director, Transport Corporation of India Ltd; Siva Dehugan, Chief Brand Officer, Let's Work; Mohit Gupta, Chief Curator, City Book Lovers and Karthikeyan, Director of Analytics

are made by P Balaji, Chief Regulatory and Corporate Affairs Officer, Vodafone India Ltd, who said that the 'light touch' between the regulator and the digital is important for growth.

A panel discussion on 'Innovation in the digital age' was moderated by Srinivas Subrahmanya, Chief Brand Officer, Airtel Ventures. The panelists Vinod Khosla, Managing Director, Transport Corporation of India Ltd, Abhinav Singh, Managing Director and CEO, Udaan Corporate Security Pvt. Ltd, Rohit Gupta, Chief Curator, City Block advisors, Karish Sharma, Director, Airtel participated in the discussion. It was dampened as no longer an event as a dialogue.

46th National



Dr P Balaji, Chief Regulatory and Corp. Affairs, Pal, Chairman, Member, Global Vice President, AIAA, is Chairman and Managing Director, Pal.



ADITHYAN NATH

Chief Brand Officer, Let's Venture; Monik G.

Peter Dinklage, Managing Director, Transmedia, and Martin Scorsese, Chief Curator, City Book Locations and...



ort
Kard:

PUBLICATION: The Avenue Mail

DATE: 5 September 2019

EDITION: Jamshedpur

PAGE: 8

Vandana Shiva to address 6th Dr Verghese Kurien Memorial Oration

Mail News Service

Jamshedpur, Sept. 4 : Noted scholar and environmental activist Vandana Shiva will address the 6th 'Dr Verghese Kurien Memorial Oration on Sustainable Development' on September 21 at XLRI Campus, Jamshedpur.

Fr. P. Christie director of XLRI said: "Dr. Verghese Kurien was an ingenious thinker, a revolutionary and a social entrepreneur who ideated the world's biggest agricultural development programme. It was his 'billion-litre idea' which made dairy farming

India's largest self-sustaining industry, with benefits of employment, incomes, credit, nutrition, education, health, gender parity & empowerment, breaking down caste barriers and grassroots democracy and leadership. XLRI instituted the oration in his memory with the aim to commemorate his legacy through propagating and disseminating the idea of an empowered, equitable and sustainable society."

"Dr. Verghese Kurien Memorial Oration on Sustainable Development is our humble initiative to pay tribute to the great vision-



ary," said Prof. Madhukar Shukla, Chairperson of XLRI's Fr Arrupe Center for Ecology &

Sustainability. "With this annual oration, we aim to inspire and inculcate values of entrepreneurial spirit in budding business leaders and social entrepreneurs", he added.

Dr. Vandana Shiva is an Indian physicist and social activist. She founded the Research Foundation for Science, Technology, and Natural Resource Policy (RFSTN), an organization devoted to developing sustainable methods of agriculture, in 1982. She worked on grassroots campaigns to prevent clear-cut logging and the construction of large dams. She was

perhaps best known, however, as a critic of Asia's Green Revolution, an international effort that began in the 1960s to increase food production in less-developed countries through higher-yielding seed stocks and the increased use of pesticides and fertilizers.

The Green Revolution, she maintained, had led to pollution, a loss of indigenous seed diversity and traditional agricultural knowledge, and the troubling dependence of poor farmers on costly chemicals. In response, RFSTE scientists established seed banks throughout India to pre-

serve the country's agricultural heritage while training farmers in sustainable agricultural practices. In 1991, Dr. Shiva launched Navdanya.

The project, part of RFSTE, strove to combat the growing tendency toward monoculture promoted by large corporations. She has also launched Diverse Women for Diversity, an international version of Navdanya and opened BijaVidyapeeth, a school and organic farm offering month-long courses in sustainable living and agriculture, near Dehra Dun in 2001.

PUBLICATION: The Avenue Mail
DATE: 17 September 2019
EDITION: Jamshedpur
PAGE: 5

Building entrepreneurship skills among MNPS students



Jamshedpur, Sept. 16: An E-cell activity was held at Motilal Nehru Public School (MNPS) on Monday. The resource person Vishal Kumar of Learning While Travelling (LWT) who is also a former student of MNPS along with the E-cell members of XLRI conducted the event focused towards development of entrepreneurial skills in students. After the session he motivated children for innovative thinking looking for smart solutions to problems and how to accept modern challenges and become self dependent.

The students of Std. IX, X and XI participated in the above program. The winners were Aditya Singh, Krishal Prasad, Raunak Mishra, Harshita Dutta, Anshara Jahan and Saltanat Javed.

Preceding this programme, "Peace of Mind" was conducted by Sant Namdevji from Delhi who explained about yoga and the benefits of meditation. Namdevji spoke about using meditation as a mechanism for transmitting energy for the awakening of divinity within one's self.

PUBLICATION: The Avenue Mail
DATE: 28 September 2019
EDITION: Jamshedpur
PAGE: 8

Former director of XLRI conferred Academic Leadership award

Mail News Services

Jamshedpur, Sept 27 : E. Abraham, former director, XLRI-Xavier School of Management has been honoured by All India Management Association (AIMA) with 'AIMA - Kewal Nohria Award for Academic Leadership in Management Education' 2019. Abraham was also conferred the 'AIM - ASMA Lifetime Achievement Award' at the 3rd ASMA Annual Convention & Awards 2019. He has been the longest serving

Director of XLRI. His total tenure as Director spanned for over 16 years across two terms. He himself is also an alumnus of XLRI.

P. Christie, director, XLRI congratulated Fr. E. Abraham and commented, "Fr. E. Abraham has been a true leader not only of XLRI but also of India's management academia. He has been an inspiration to the entire XL family and we have been immensely fortunate to follow his legacy. Our sincere congratulations to him for his accomplishments."

Abraham is highly regarded as



a champion of India's manage-

ment academia and an eminent thought leader in academic governance who has immensely contributed to the field. He has been the Founder-Secretary of the National HRD Network and the Founder-President of Indian Association of Autonomous Business Schools. He is also on the boards of International Association of Jesuit Business Schools and Association of Asia Pacific Business Schools. He has been the President of the Association of Indian Management Schools and a mem-

ber of the board at IRMA. He has also been member of National Board of Accreditation and member of All India Board of Management Studies.

He is presently serving as a member of board of governors at many Indian and foreign business schools, like XLRI Jamshedpur, St Xavier University Kolkata, St Xavier University Bhubaneswar and Asian Institute of Management, Manila. He has received numerous accolades for his contribution to management education.

PUBLICATION: The Avenue Mail
DATE: 4 September 2019
EDITION: Jamshedpur
PAGE: 6

XLRI launches theme of its annual fest



Jamshedpur: XLRI's annual cultural, sports, and management festival Ensemble-Valhalla is all set to take place from November 1 to 3. The institute celebrated the theme launch event of the fest - IGNITO which saw massive participation from students and faculty alike.

The theme of the fest this year is 'Break Free' which will celebrate innovation and encourage people to break free from the shackles which might be holding them back from bringing the innovator in them to the fore. With the rapid dynamics of business changing constantly, innovation is the only way forward to ensure that companies keep thriving. The theme is designed in a way that the budding managers feel inspired to innovate. The event saw participation from all the student committees on campus who organised different activities for the students. The banner of the theme for Ensemble-Valhalla was unveiled amid huge cheers and the first event of Ensemble-Valhalla completed after the release of the sky lanterns which illuminated the night sky signifying the beginning of a new edition of Ensemble-Valhalla is the annual cultural, sports, and management fest of XLRI. The fest will take place on the 1st-3rd of November. XLRI's flagship fest Ensemble-Valhalla has witnessed participation from various B-schools across the country and performances by renowned artists like Amit Trivedi, Lucky Ali, Nikhil D'Souza, The Local Train, Vipul Goyal, Sorabh Pant, Biswa Kalyan Rath, and Zakir Khan. The multifaceted fest is expected to be a grand celebration of spirit and character encompassing the values and integrity of India's oldest business management school.

PUBLICATION: The Avenue Mail
DATE: 22 September 2019
EDITION: Jamshedpur
PAGE: 3

XLRI holds the 6th Verghese Kurien Memorial Oration

Dr. Vandana Shiva, Eminent Environmental Activist & Eco-feminist delivers the Oration

Jamshedpur, Sept. 21 : XLRI- Xavier School of Management today organised the 6th "Dr Verghese Kurien Memorial Oration on Sustainable Development". Organised under the aegis of Fr Arrupe Center for Ecology and Sustainability (FACES), XLRI, in memory of the Founder of AMUL Dr. Verghese Kurien, otherwise known as "the Milkman of India", the oration aims to provide a platform to listen to and learn from thought leaders, social entrepreneurs, development sector professionals and policy makers who have made a significant contribution to the idea of an empowered, prosperous and sustainable society. This year, Dr. Vandana Shiva, eminent Environmental Activist & Ecofeminist delivered the oration on the topic "Oneness vs The 1%".



Ecological responses to the threat for planet and humanity".

The event was also graced by Ms. Nirmala Kurien, daughter of Dr Verghese Kurien with Fr. P. Christie, S. J., Director of XLRI, Dr. Ashis K. Pani, Dean (Academics), XLRI, Dr. Madhukar Shukla, Chairperson, Fr. Arrupe Center for Ecology & Sustainability (FACES), XLRI and other dignitaries.

In her speech, Dr. Vandana Shiva observed, "The principles and ideas that shaped Dr Kurien's contribution to the cooperative dairy sector are

principles and ideas that have shaped my work on seeds, biodiversity and agro-ecology. These are principles of justice and sustainability." She pointed out in her address that Dr Kurien's movement was built on Cooperation and not Competition. "Cooperation is the law of nature and justice in society, cooperation creates abundance and peace. Competition is an artificial construct that creates scarcity and conflict. Dr Kurien focused on the small producers and created the largest dairy economy of the world. He did not

impose the violence of centralised factory farms," she added.

Elaborating about her 'Navdanya' movement, she said that the 'Navdanya' movement focuses on the small seed, and the small farmer.

"Industrial agriculture based on fossil fuels and chemicals has destroyed soil, contributed to water emergency and climate emergency, which has led to hunger, malnutrition and chronic diseases. Navdanya's work has shown that by conserving our biodiversity and practicing agro-ecology, we can remove

hunger, end farmers' suicides, and stop the spread of toxics and chemicals which are killing biodiversity and spreading cancer."

In his address, Fr. P. Christie, S. J. Director of XLRI, welcomed Dr. Vandana Shiva and elaborated on her contributions and movements for food security. He said, "We are indeed privileged to have with us Dr Vandana Shiva, a well-known environmental activist, food sovereignty advocate, and an active participant in the global solidarity movement known as the alter-globalization movement. She has actively promoted biodiversity and indigenous knowledge to increase agricultural productivity, nutrition and farmer's income. She has devoted her life to give life to earth and the poor who

have been affected."

Prof. Madhukar Shukla, Chairperson of XLRI's Fr Arrupe Center for Ecology & Sustainability (FACES), said in his address, "FACES at XLRI was established with the mission to promote practices and policies, which will help create an environmentally, socially and economically sustainable and just society."

"The Oration is to commemorate the memory of Dr Verghese Kurien, since, needless to say, that there is no better model for sustainable development - both in terms of his life and legacy - than Dr Kurien. It is an honour to have Dr. Vandana Shiva, a noted environmentalist and ecofeminist, with us today to deliver the 6th Dr Verghese Kurien Oration this year," Prof. Madhukar Shukla further added.

THE OCCUPATIONAL SAFETY, Health and Working Conditions Code, 2019, seeks to combine 13 laws relating to factories, mines, dock workers, building and other construction workers, plantation labour, contract labour, interstate migrant workmen, working journalist and other newspaper employees, motor transport workers, sales promotion employees, health and safety engineers, cinema theatre workers. It, clearly, is an uneasy amalgam of laws that cover a wide variety of workers belonging to the organised (factory, dock, mine) and the unorganised (contract, construction workers) sectors.

Even though the government claims that it covers establishments employing 10 or more workers, as we read through the code we do find varying thresholds for contract labour (seven (10 workers), safety committee or officer (500 workers in factories and construction sites)—and this implies that the code dispenses with the universal coverage model that was intended in the wages and social security codes.

The occupational safety code has not dealt with adequately and even negatively, the issues concerning occupational safety and health. The Factories Act, 1948, lists the maximum permissible threshold limits of exposure of chemical and toxic substances in manufacturing processes in the Second Schedule, which could be expanded as per the advice of the experts, while the code conspicuously omits the Second Schedule and, in fact, leaves the enumeration of these to be decided by the state governments (Section 83).

Further, the Factories Act stipulates the compulsory constitution of a bipartite safety committee in every factory in which hazardous process or substance is used. But the occupational safety code leaves the constitution of the safety committee to the notification process of the appropriate government (Section 27), and hence the Section 14 reads uncertain. The worker who apprehends a health hazard shall represent it to the committee. "If consulted by the employer," "What was earlier a workers' right, now has been reduced to a 'prospective' subject to the whims and fancies of the state government.

On one hand, technological innovation and innovation pose considerable threats and challenges to the occupational safety and health issues in the organised sector, and potentially dangerous work performed in the unorganised sector for securing subsistence wages such as rag picking, hence, hazardous work needs a wider coverage to include those performed in the unorganised sector as well. It bears relevance to mention here the Chapter IV-A—that deals with several issues concerning occupational safety and health, and was inserted in the Factories Act in 1987 post the Bhopal gas tragedy—which has been since to the regulations concerning it.

According to the Annual Survey of Industries in 2016-17 less than 5% of the factories in operation employed more than 499 workers, while those employing 50 or more workers constituted 70.33% of total employment, which means the safety provisions have very limited coverage. Furthermore, the average size of a factory in the organised sector (i.e. workers employed per factory) has declined from 65.97 in 2010-11 to 12.12 in 2012-13, to 48.04 in 2014-



ILLUSTRATION BY: PRADEEP

KR SHYAM SUNDAR

The author is professor, M.R. Somaiya School of Management, Jamnabai



Occupational Safety Code needs serious evaluation

Ironically, the Occupational Safety Code has not adequately dealt with issues concerning occupational safety and health, which is non-negotiable and even fit to be a fundamental human right, for this spills beyond the workplace and into larger spaces affecting people and the environment (case in point is the Bhopal gas tragedy)

15 to 2016-17, and given the wide-spread impact of technological progress in production processes, especially in chemical and other potentially hazardous industries, occupational safety and health becomes a universal concern, and hence gradually cover more and more establishments. This is one of the reasons India has not ratified 12 of the 17 occupational safety and health convention of the International Labour Organisation. In fact, occupational safety and health should be non-negotiable and is fit to be enshrined as a fundamental human right, for this spills beyond the workplace and into larger spaces affecting people and the environment (the case in point is the Bhopal gas tragedy).

The occupational safety code requires the employers to seek prior consent from the workers to perform overtime (as also for night shift in case of women employees), which is a welcome move. But the individual worker may not, in reality, enforce this right in case of violation of this by the employer due to well known reasons: the absence of or weak supportive institutions like trade unions and labour inspection. Nonetheless, these unimpeachable empirical realities need not discourage the lawmakers to drop this important labour right.

For the time being, the legislative history, the occupational safety code requires every employer to have an appointment letter, but does not stipulate a remedy in case of non-compliance with the general statutory penalties provided for violation for any clause of it. In China, if the employer fails to conclude a written contract within one year of employment of a worker, then the latter will be deemed to have been appointed in an open-ended contract.

While the Factories Act precisely stipulates the hours of work, spread time and the overtime, the occupational safety code leaves these to the discretion of the appropriate government. This is a bad law-making process. When the states compete for fresh capital and retaining the existing ones, the employers can use of the threat of relocation or export orders (which legitimises any reform irrespective of their consequences to labour standards) to coerce the genuinely unwilling governments to stipulate unwelcome standards on these. Therefore, these will lead to a race to the bottom of labour standards.

Finally, Section 47(2), a new clause, allows labour supply contractors by giving them to secure "non-transferable work specific licence" to execute a specific work mentioned in it, even if they do not fulfil the requisite qualifications or criteria. This, at once, reaches the zenith of flexibility and pliability to the depths of perversion. What must anger the working class is that despite the Supreme Court's longstanding ruling on and the universally agreed labour market norm of "equal work, equal pay" the government is refusing to legislate the same, even though this exists in the Rules framed under the Contract Labour Act.

Codification is necessary to rationalise pre-mature labour laws, but this should not lead to bundling together of diverse and unique laws concerning differently positioned categories of workers, which are yet to mature into meaningful pieces of legislation (for example, the law on building and construction workers) in their own right and hence need respective suitable amendments.

Ola plans to hire 100 freshers from engg colleges, B-schools

RIDE-HAILING PLATFORM OLA on Tuesday said it planned to hire over 100 freshers from top engineering colleges and B-schools for roles ranging from product developers and research engineers to business analysts over the next 6-12 months. Ola is targeting premium business schools and institutes across the country, including IIMs (Ahmedabad, Bangalore, Calcutta and Lucknow) as well as institutes like XLRI, ISB, NIT, BITS Pilani and IITs (Delhi, Madras, Roorkee and Guwahati), among others, as part of its campus placement programme - Campus Connect, the firm said.

PUBLICATION: The Hindu Business Line
DATE: 9 September 2019
EDITION: All Edition
PAGE: 15

Economy in doldrums

It all began with demonetisation

GAURAV VALLABH

In the June quarter, the Indian economy grew at the lowest rate in six years. Nominal GDP was recorded at just below 8 per cent for Q1 of FY20, which is the lowest in 15 years. Abysmal consumption levels and sluggish investment are being painted as the villains of the India growth story.

Scratch the surface and the reason for this short-changed Indian consumer emerges. More than 3.5 lakh people have lost their jobs in the auto industry alone, nearly 60,000 diamond workers are currently jobless in Gujarat, prominent industrial cities like Jamshedpur saw 30,000 job losses with more than 700 companies being closed in the last two months. Under-performance is evident in almost every sector.

Another reason for the low consumption expenditure, the main engine of growth since FY12 is the steep dip in government final consumption expenditure which, grew by only 8.8 per cent in Q1, compared to 13.1 per cent last quarter. Moreover, urban consumption has been impacted by the liquidity crunch facing NBFCs, and rural consumption by the negative terms of trade facing the agriculture sector.

However, the biggest setbacks to consumption expenditure is the impaired growth of the three major employment-generating sectors for the semi and unskilled worker segments.

In spite of low commodity prices, the manufacturing sector was not able to grow. This is primarily due to contraction in volumes in the auto sector, decline in value of merchandise exports and slowdown in growth in other consumer sectors. Construction sector growth has fallen to a seven quarter low. After agriculture, construction is the second largest employer and has high impact backward and forward linkages with other sectors. This sector has been

hit by demonetisation, changes in the Real Estate Regulation Act and a weakened funding scenario. Perhaps the only sliver of hope in the GDP data is the modest pick-up in agriculture sector growth. However, real growth remains low and so do food prices. So, farmers have not benefited of this growth.

The GDP data clearly points that the country is heading towards a major economic crisis. But the question which rankles every Indian is: "Why is our economy in this state?" The answer is, the economy has not yet recovered from the man-made blunders of demonetisation and flawed GST implementation.

Political sentiments continue to score over economic concerns in

the government's decision-making. The low inflation rate that the current government likes to showcase comes at the cost of our farmers and their incomes. Business owners, who should be partners of the

government in the economy's growth, are hounded and tax terrorism continues unabated. Investor sentiments are at an all-time low as reflected by the low gross fixed capital formation at 4.4 per cent. Without a significant hike in capital formation, new jobs cannot be created.

Sinking economy, rising bank frauds and systematic decimation of the economy — farms, factories and finance — are deepening economic distress. We have to think of innovative and new ideas to improve public and private investment. As long as purchasing power and liquidity do not reach the person at the last mile of the rural economy we cannot expect major improvement in consumption and job levels. We cannot afford to continue on this path expecting natural recovery.

A clear economic focus on growth is required to steer the economy from this slowdown.

The writer, a Congress spokesperson, is with XLRI



PUBLICATION: The Hindu Business Line
DATE: 19 September 2019
EDITION: All Edition
PAGE: 18

BUSINESS STRATEGY

IIM Ranchi emerges victorious in Kolkata round of BLoC Boardroom Challenge

IIM Shillong was runner-up among the six teams in the semi-final

OUR BUREAU

Kolkata, September 18

A team from IIM Ranchi won the Kolkata semi-final of the BLoC Boardroom Challenge, held at the International Management Institute on Monday. The runners-up were from IIM Shillong.

The other teams in the fray were from XLRI, IIM Calcutta and IMI Kolkata. The teams had to come up with a sound business strategy for a detergent maker to increase its revenue growth and profitability.

Though the IIM Ranchi team's strategy was drawn up by four students — Jasmeet Singh Bindra, Raghvendra Pratap Yadav, Shubham Garg and Mohanish Golatkar — it was presented by Garg and Golatkar, who impressed the jury with their lucid grasp of the business problem and the solution based on a pragmatic projection of revenues.

The runners-up from IIM Shillong — Garima Singh Nahar, Apoorva Bansal and Ritika Jha — also displayed an admirable understanding of the numbers in a strategy



From left: Arindam Banik, Director, IMI-K; Sunil Bhandari, Executive Director Corporate, part of Group Finance for the RP-Sanjiv Goenka Group; Mohanish Golatkar and Shubham Garg from IIM Ranchi; Rituparna Basu, Associate Professor, Marketing, Retail and Entrepreneurship, IMI-K; and Vishwadeep Kuila, founder, Brand Vectors

marked by detailed calculations.

Aditya Birla Sun Life Mutual Funds is the title sponsor of the event, which is powered by Swiss watch brand Frederique Constant. Vizag Steel Plant and One Crest are the associate sponsors.

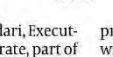
Importance of saving

After the first three team presentations, Mohammed Aamir Sulaiman, AVP, Investor Education and Distribution Development at Aditya Birla Sunlife Asset Management Company, made a presenta-

tion titled *Your First Pay Cheque* that highlighted the importance of saving early in one's career.

The talk evoked interest and a few queries from students on assessing risk during investing and how to choose the right investment options.

The jury comprised Sunil Bhandari, Executive Director Corporate, part of



Group Finance for the RP-Sanjiv Goenka Group; Vishwadeep Kuila, Founder of brand consultancy Brand Vectors, who also wrote the semi-finals case; and Rituparna Basu, Associate Professor, Marketing, Retail and Entrepreneurship at IMI-K.

Arindam Banik, Director, IMI-K, presented mementoes to the winners and the runners-up.

PUBLICATION: The Hindu
DATE: 9 September 2019
EDITION: Bangalore
PAGE: 7

■ MADHURITHA SRINIVASAN

Job hunts, business deals and funding prospects are now increasingly being facilitated over a previously overlooked advantage - the alma mater connect.

Take for instance, IvyCamp - a technology based platform, that leverages on the global alumni network. It partners with educational institutions and alumni to connect entrepreneurs with experts, investors, corporates, and other entrepreneurs. This is based on the premise that it is easier to get a foot in the door with your investor if you are from the same alma mater as him/her.

Colleges in India too are becoming aware of the benefits an actively engaged alumni can have for the institution and its students. Here are some reasons why you and your college should work towards building an active community of alumni:

Brand building

With mushrooming educational institutions around the world, one way for an institute to stand out from the domestic and international competition is by promoting its brand. And an institute's alumni are its best bet. "One of the strongest legs of brand (XLRI) is its alumni," says Rana Sitla, National President, XLRI Alumni Association, a registered organisation with Chapters around the world. Besides the alumni's professional successes driving the brand, other factors that contribute to promoting the brand are campus recruitments and social campaigns, both driven by the alumni.

"I chose to study at IIM solely for its alumni network. It is true for Ivy League colleges too. Their alumni networks are like exclusive clubs, once you gain access into it, you can tap into the various opportunities, with jobs being the most obvious and relevant one, especially in the early stages of your career," explains Vivek Mohan, Vice President at a global private equity fund.

He confesses that he has tapped into the alma mater con-

The ALMA MATER connect

Networking, interacting and staying in touch - the alumni network offers students and colleges a host of benefits

nect for business. "It works every single time. When I am looking at potential companies we would like to invest in, I first look up LinkedIn to see who is the IIM or BITS Pilani guy there, and start from there. It works the other way too - when someone from my alma mater messages me asking for some advice, I automati-

● Alumni networks are like exclusive clubs; once you gain access into it, you can tap into the various opportunities

● Donating to one's alma mater or fund raising by colleges is a relatively newer practice which helps from scholarships to research and community initiatives

● Young alumni should volunteer their time and take ownership of chapter level initiatives

cally say yes. It's like paying it forward."

The effectiveness of this 'business connect' has been explored in the article, "The Power of Alumni Networks" published in *Harvard Business Review*. "After analysing more than 15 years' worth of investment data, we've found one way that information gets around and improves investing performance: through alumni networks... What's more, both the size of their bets and the size of the returns increase with the strength of the connection. For instance, if the mutual fund manager and the CEO of the company were both Wharton MBA graduates, Class of 1970, the effect would be even stronger than if the manager graduated in 1970 and the executive in 1980."

Grading and giving back

Year after year, the race for rankings gains more prominence as more institutions throw their hat into the ring. While factors from infrastructure, quality of faculty, curriculum design and research facilities, are taken into consideration, now alumni success and engagement are also increasingly

being given weightage for the additional edge.

National Assessment and Accreditation Council's (NAAC) Revised Assessment and Accreditation Framework launched in July 2017, indicates a shift in several metrics, one of it being to bring in enhanced participation of students and alumni into the assessment process. It assigns 10 points to Alumni Engagement which it states "can contribute in academic matters, student support as well as mobilisation of resources - both financial and non-financial. The institution nurtures the alumni association/chapter to facilitate them to contribute significantly to the development of the institution through financial and non-financial means." The points are as much as those assigned to parameters such as Institutional Vision and Leadership, and Strategy Development and Deployment.

Forbes' proprietary Grateful Graduates Index assesses if a college is producing happy and suc-

cessful alumni in two ways: by looking at the seven-year median gifts per full-time enrolled student and the average percentage of alumni who give back, regardless of the amount in which they give.

Donating to one's alma mater or fund raising by colleges is a relatively newer practice in Indian colleges, that have taken up to the support that these funds can provide - scholarships, endowment chairs, infrastructure development, research, community initiatives, and many more.

"We have a small fund which is now going mainly towards providing scholarships to current students," says Sitla, "But universities such as Harvard and Yale have corpus in billions, a significant part donated by their alumni."

In keeping with the trend, Indian colleges are reaching out to their alumni, who, with international exposure, are equally aware of the significance of giving back to one's alma mater.

Alumni donations to the top five IITs may cross ₹1,000 crore by the end of this financial year, quotes a report in the *Economic Times*.

IIM Bangalore has received pledges worth ₹1.35 crores for scholarships, research and infrastructure from two batches of alumni that celebrated their reunions on campus last December.

"We consider our alumni to be our assets and ambassadors and we are constantly exploring new ways of engaging with alumni across the world. The trend of alumni giving back to the alma mater has seen a rise in the last few years, and this is largely on account of a vibrant and engaged alumni network," Professor K Kumar, Dean of Alumni Relations and Development, IIMB, is quoted as saying in a report published on the institute's website.

Skill development

Having an active alumni network is immensely beneficial to the students presently studying in the college as well. "Young alumni and students can benefit in their professional lives by learning from senior alumni, getting to hear about interesting job opportunities, and so on," says Krishnan Narayanan, Co-Chair of Sangam 2019, the annual event of the

The trend of alumni giving back to the alma mater has seen a rise in the last few years and this is largely on account of a vibrant and engaged alumni network.

IIT Madras Alumni Association.

"Young alumni should volunteer their time and take ownership of chapter level initiatives. This is an excellent platform to build/hone their leadership skills. The alumni enjoy and gain professionally by participating in the various alumni association activities. There is also knowledge sharing by senior/expert alumni - we have 18 active Special Interest Groups on various topics such as entrepreneurship, artificial intelligence, and so on."

Through these regular interactions, colleges are able to keep track of their alumni's progress, and identify those they can reach out to for mentorship and placements. The more engaged a college is with its alumni, the easier it gets to place its students. The placement committee meets with influential alumni who are in a position to decide on where to go for campus placements and invites them. With placements being one of the biggest draws of applications for a college, alumni engagement will prove to be a good strategy.

But this strategy will work only as a cyclic process. Colleges need to instil a sense of pride and loyalty in their students, which in turn will make them emotionally invested in their alma mater's success, nudging them to give back through financial and non-financial means. In this strategy lies the motivation as well as the reward, for both the alumni as well as the institutions.

PUBLICATION: The Telegraph
DATE: 21 September 2019
EDITION: Jamshedpur
PAGE: 10

GOOD MORNING

EVENTS

■ Dr Verghese Kurien
Memorial Oration on Sustainable Development at
Tata Auditorium, XLRI,
Jamshedpur, 6pm.

PUBLICATION: The Telegraph
DATE: 4 September 2019
EDITION: Jamshedpur
PAGE: 10

Marine Drive is now a risky drive

ANIMESH BISOOE

Jamshedpur: The steel city's four-lane landmark, Marine Drive, has developed potholes across several stretches even though monsoon rains this year have been erratic, making it extremely difficult for commuters to negotiate the 11km expressway that is among the 19 mishap-prone "black spots" identified by the district administration.

The dangers are apparent on several stretches of Marine Drive, built by Tata Steel at a cost of Rs 120 crore in 2015, near the new Domuhani bridge, XLRI International Campus, Parsi cemetery and near Sonari.

"I was going to Mango from my residence on my bike on Monday when an SUV suddenly swerved into the wrong lane to avoid a crater near the XLRI campus. Fortunately, I was driving slow and managed to keep balance. Otherwise, it could have led to a serious accident," said Sanjay Dubey, a resident of Swarna

Vihar, Sonari.

He described Marine Drive as "dangerous" as vehicles drove at breakneck speed, least expecting an expressway to have uneven surface. "Now the road is riddled with potholes," said the advocate.

Marine Drive, named after Mumbai's iconic thoroughfare along the sea, runs along Subarnarekha River and Kharkai River. It was constructed to keep heavy vehicles off city roads. It is maintained by Tata Steel's utility wing, Jusco.

Everyday, over 2,000 trucks and trailers use the stretch to carry goods to industrial units in Adityapur and Gamharia and over 50 long-distance buses take passengers to Ranchi and parts of Bihar.

After the new Domuhani bridge was opened, commuters have started using Marine Drive to take a detour to reach Kanderbera on NH-33 to avoid paying toll tax on Tata Kandra road.

Elderly residents who often use Marine Drive for

morning walks feel vulnerable too.

"We are afraid to take morning walks as bikers and four-wheelers, in order to avoid potholes, tend to drive along the edge of the road. There is always a risk that we will get hit," said Dulal Chandra Das (68), a retired government school teacher and resident of Vrindavan Garden apartments in Sonari.

Sources in Jusco's road unit admitted there was a problem, but claimed that necessary repairs had been initiated.

"We have started resurfacing work on big craters after it was brought to our notice. We have completed a survey of the stretch and will be starting to fill potholes soon. The stretch will be smooth before Durga Puja," said the Jusco official.

Jusco spokesperson Sukanya Das promised to stick to schedule. "We will be filling up potholes on Marine Drive as per our annual road maintenance work before the festive season," she said.

PUBLICATION: The Telegraph
DATE: 22 September 2019
EDITION: Jamshedpur
PAGE: 8



SMALL WONDERS: Visitors at the 5th Bonsai Fest organised by Horticultural Society of Jamshedpur at Tube Makers' Club in Golmuri on Saturday. There were around 50 bonsai plants on display. Picture by Bhola Prasad

XLRI STUDENTS TEACH 100 SCHOOLKIDS LIFE SKILLS

Phubbing ain't cool, it's rude

OUR CORRESPONDENT

Jamshedpur: Have you ever been phubbed in a family gathering, at a get-together with friends or on a date?

Phubbing occurs when you've been snubbed by someone for a phone-based activity.

On Saturday, B-school XLRI, through its students' outfit Samarthya, taught around 100 students of two Jamshedpur schools why phubbing wasn't cool, rather it was bad manners and an unsocial activity. A part of Samarthya's annual event Reflections, the activity focussed

on emotional intelligence.

Students from two schools, Kerala Public School, Kadma, and RMS High School, Khutadih, were made to test their emotional intelligence.

This was followed by activities to combat phubbing, tested on multitasking vs single tasking to see how multitasking increased stress. They were given a value card exercise that taught them to be respectful of others even if values clash.

Samarthya, the youth wing of Centre for Education Management, Leadership and Research (CEMLR) in XLRI, is a committee dedicated to chil-

dren's welfare, and operates under the guidance of Father Peter Francis. The committee was formed with the sole aim of helping the school students of Jamshedpur, their parents and their teachers handle various facets of growing up.

Rahul Sharma, a second year XLRI student who's the secretary of Samarthya, said emotional quotient was in many ways more valuable than intelligence quotient to handle real life. "We want to orient students to this through life-skill activities. Open communication and respect for others are effective

for problem solving," he said.

For example, through a questionnaire asking students to describe instances when they had phubbed someone or when they had been phubbed, youngsters realised it was hurtful if a beep on the smartphone was more important than the person in front of you.

Asked how the three-hour session helped, Chandni Biswal, a Class XII student of Kerala Public School, Kadma, said their generation often did not realise they were always on the phone and lacked human interaction. "It's rude," she said. "I'll change now."

PUBLICATION: The Telegraph

DATE: 22 September 2019

EDITION: Jamshedpur

PAGE: 10

Co-operation mantra for happy planet



Environment activist and ecofeminist Vandana Shiva at XLRI in Jamshedpur on Saturday. Picture by Bhola Prasad

OUR CORRESPONDENT

Jamshedpur: Co-operation, not competition, is the way to a happier planet, said eminent environment activist and ecofeminist Vandana Shiva at Tata Auditorium on Saturday.

Shiva spoke at the 6th Dr Verghese Kurien Memorial Orator on Sustainable Development, hosted by XLRI under the aegis of Father Arrupe Center for Ecology and Sustainability (FACES), in memory of Amul's founder Verghese Kurien, known as "the Milkman of India".

The oration gives a platform to thought leaders, social entrepreneurs, development sector professionals and policy makers who have contributed to the idea of an empowered, prosperous and sustainable society.

Kurien's daughter Nirmala, director of XLRI Father

P. Christie, dean of academics Ashis K. Pani, chairperson of FACES (XLRI) Madhukar Shukla and other dignitaries attended the oration.

Shiva said 1 per cent of the country had treated nature as a disposable commodity and destroyed the ecosystem thereby creating economic, political and social polarisation.

She observed that the principles that shaped Kurien's contribution to the cooperative dairy sector were those that shaped her work on seeds, biodiversity and agro-ecology. "These are principles of justice and sustainability," she said, pointing out Kurien's movement was built on cooperation and not competition.

"Co-operation is the law of nature and justice in society, cooperation creates abundance and peace. Competition is an artificial construct that cre-

ates scarcity and conflict. Dr Kurien focused on the small producers and created the largest dairy economy of the world. He did not impose the violence of centralised factory farms," she said.

Shiva, who founded the Research Foundation for Science, Technology, and Natural Resource Policy (RFSTN), an organisation devoted to developing sustainable methods of agriculture, in 1982, and started grassroots campaigns to prevent clear-cut logging and the construction of large dams, is also one of the best known critics of Asia's Green Revolution. In 1991, Shiva launched Navdanya project (Navdanya means "nine seeds" symbolizing protection of biological and cultural diversity) to combat the growing tendency toward monoculture promoted by large corporations.

She has launched Diverse Women for Diversity, an international version of Navdanya, and opened Bija Vidyapeeth, a school and organic farm offering month-long courses in sustainable living and agriculture, near Dehradun, in 2001.

On Navdanya, she said it focused on the small seed and the small farmer. "Industrial agriculture based on fossil fuels and chemicals has destroyed soil, contributed to water and climate emergency, which has led to hunger, malnutrition and chronic diseases. Navdanya's work has shown that by conserving our biodiversity and practising agro-ecology, we can remove hunger, end farmer suicides, and stop the spread of toxins and chemicals which are killing biodiversity and spreading cancer."

An interactive session with students followed her speech.

